Chapter-4

-=: चतुर्थ अध्याय :=-

: कमलेश्वर के कथा-साहित्य की चरित्र-सृष्टि :

चतुर्थ अध्याय

कमलेश्वर जी के उपन्यासों में चरित्र - सृष्टि और प्रमुख पात्र :

(अ) प्रस्तावना :

उपन्यास में सर्वाधिक महत्व घटना का है या चरित्र अथवा पात्र का - यह एक विवादास्पद प्रश्न है ; किन्तु इतना तो निस्संकोच कहा जा सकता है कि जिस प्रकार वस्तु - जगत अपने चित्र - विचित्र मनुष्यों के बीच साँसे भरता है उसी प्रकार उपन्यास - जगत् के सृजन के पीछे मानव के सरल - विचित्र, रोचक - अरोचक एवं अच्छे - बुरे कार्यों का महत्वपूर्ण हाथ होता है । उपन्यास में पात्रों के रूप - रंग, वेशभूषा, रहन - सहन, क्रियाकलाप, आचार - विचार एवं विचाराभिव्यक्ति के व्यक्तिगत ढंग को कुछ इस प्रकार चित्रित किया जाता है कि उपन्यास के अमूर्त पात्र अपनी अलग पहचान बना लेते हैं, यदि इस कार्य को उपन्यासकार सफलतापूर्वक कर सका तो उसके पात्र अमर हो जाते हैं, भले ही उनका चित्रण मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर किया जाय अथवा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष शैलियों के द्वारा किया जाय ।

पात्र की परिभाषा :- फॉर्स्टर ने लिखा है कि -- " The novelist...... makes up a number of words-masses roughly describing himself...gives them names and sex assigns them possible gestures and causes them to speak by the use of inverted commas, and perhaps to behave consistently. These word-masses are his characters." 1

(आत्माभिव्यक्ति करता हुआ उपन्यासकार कुछ एक शब्द मूर्तियाँ गढ़ डालता है, फिर उनके साथ नाम और लिंग जोड़ता है, उन्हें अनुभाव प्रदान करता है, उनसे उद्धरण - चिन्हों में बात-चीत करवाते हैं और कदाचित उनसे एकसार व्यवहार भी करवाते हैं - ये शब्द मूर्तियाँ ही उपन्यास के पात्र हैं ।)

कई विद्वानों ने उपन्यास का मुख्य विषय मानव - जीवन को माना है । प्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यासकार हेनरी जेम्स ने तो इसी बात पर जोर देते हुए यहाँ तक कह दिया है कि --"उपन्यास के अस्तित्व का एक मात्र कारण यह है कि वह जीवन के चित्रण का प्रयास करता है । "(2)

1. Forster, 'Aspects of the Novel' P.44
2. Henry James, " The art of Fiction ", 'The portable Henry James', P.393.

उपन्यास का वास्तविक विषय तो मानव है पर मानव जीवधारी है, उसका जीवन होता है । मानव एक पहेली है, एक रहस्य है । उस पहेली को सुलझाने का, उस रहस्य को खोलने का, प्रयत्न करना उपन्यास का धरम लक्ष्य है ।
बेस्टर ने उपन्यास में पात्रों की अनिवार्यता को तो माना ही है, साथ - साथ यह भी कह दिया है कि वे यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

उपन्यास के तत्वों में चरित्र - चित्रण का सर्वाधिक महत्व है । यदि कथानक उपन्यास का मेरुदंड है तो चरित्र - चित्रण उसका प्राण है । उसमें लेखक जो कुछ प्रस्तुत करता है, वह किसी न किसी रूप में मानव - जीवन से सम्बद्ध होता है । चाहे घटना की प्रधानता हो, चाहे वातावरण की प्रधानता पर उनका सम्बन्ध किसी ऐसे तत्व से होता है जो उनमें विद्यमान रहता है । उसे पात्र कहते हैं । ये पात्र कौन हो सकते हैं । यह विवाद का प्रश्न हो सकता है । कोई प्राणी हो सकता है, कोई जड़ पदार्थ भी हो सकता है, किन्तु उनके माध्यम से लेखक अपनी जीवनानुभूति को ही अभिव्यक्ति प्रदान करता है । लेखक अपने पाठकों के सामने अपने कल्पना-व्यापार का चमत्कार प्रदर्शित करते हुए जिवन के विविध आयामों को प्रस्तुत कर देता है, जिनका सर्वोत्तम पक्ष पात्रों के चारित्रिक स्वरूपों में प्राप्त होता है । पात्रों का निर्माण नहीं होता वरन् - उनकी खोज होती है । उपन्यासों में पात्रों का स्पष्ट शारीरिक यथार्थ होना चाहिए । उपन्यासकार में शारीरिक संवेदनशीलता का जितना विस्तार होता है, वह उसी मात्रामें शारीरिक यथार्थ को अभिव्यक्ति दे पाता है ।

पात्र सामान्यत: मनुष्य ही होते हैं । उपन्यासकार स्वयं भी मनुष्य ही होता है इस कारण उसमें और उसके पात्रों में अद्भूत साम्य होता है । उपन्यासकार को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि वह चाहे जिस प्रकार के पात्र प्रस्तुत करे, किन्तु सजीव बनाए रखने का प्रयत्न करे, जिससे ऐसा प्रतीत हो कि कोई पात्र - विशेष जीवन और जगत के यथार्थ से भिन्न है । दुर्बल से दुर्बल पात्र में कुछ सबलताएँ मिल जाती हैं और सबल से सबल पात्र में कुछ दुर्बलताएँ । प्रेमचन्द ने भी इस बात की पुष्टि की है ।
" चरित्र को उत्कृष्ट और आदर्श बनाने के लिए यह जरुरी नहीं कि वह निर्दोष हो - महान से महान पुरुषों में भी कुछ न कुछ कमजोरियाँ होती हैं । चरित्र को सजीव बनाने के लिए उसकी कमजोरियों का दिग्दर्शन करने से कोई हानी नहीं होती ।

बल्कि यही कमजोरियाँ उस चरित्र को मनुष्य बना देती है । निर्दोष चरित्र तो देवता हो जाएगा और हम उसे समझ ही न सकेंगे । ऐसे चरित्र का हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता । "﴾1﴿

पात्र या पात्रों के साथ तादात्म्य-स्थिति भी चरित्र - अन्वेषण की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थिति है । पाठक उसी या उन्हीं पात्रों के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकता है जो उसकी रागात्मक और बौद्धिक वृत्ति को प्रभावित कर सकें । जीवन से सीधे लिये गये सजीव पात्र ही अपनी समस्त क्रिया - प्रतिक्रिया की स्थिति में पाठक को अजनबी से नहीं प्रतीत हो सकते । उन्हें वह बहुत कुछ अपने से अभिन्न समझ सकता है । ऐसे पात्र पाठक पर अत्यधिक प्रभाव छोड़ जाते हैं । आधुनिक युग में उपन्यास पात्रों या चरित्रों का चित्रण नहीं करता । आलोचक तादात्म्य - भाव को अधिक महत्व नहीं प्रदान करते । उनका मंतव्य है कि पाठक मानसिक दूरी बनाए रखकर तटस्थ भाव से ही कला - कृति का आस्वादन कर सकता है और तादात्म्य की स्थिति में वह रचनाकार या पात्र की पकड़ में आ जाता है तथा अपनी भाव - भूमि की समता पाकर अभिभूत हो उठता है । इस कारण उचित रूप में वह आस्वादन नहीं कर पाता ।

﴾आ﴿ पात्रों के प्रकार :

उपन्यास के पात्र सामान्य स्थिति में दो प्रकार के होते हैं -- ﴾1﴿ स्थिर ﴾2﴿ गतिशील इन्हें अंग्रेजी में Flat और Round कहते हैं ।

Flat को टाइप भी कहते हैं ।

- स्थिर पात्र अपरिवर्तनशील होते हैं । आरम्भ से लेकर अंत तक उनके चरित्र में किसी प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता । ऐसे पात्रों में परिवर्तन नहीं होता । ऐसे पात्रों में परिवर्तन नहीं होता । यदि परिवर्तन होता है तो इनके सम्बन्ध में पाठकों के ज्ञान में होता है । टाइप वस्तुतः वह पात्र है, जिसमें वैयक्तिक और सामाजिक गुण की कुछ प्रधान विशेषताएँ युगपत् प्रस्तुत की जाती हैं । केवल सामाजिक विशेषताएँ ~~प्रस्तुत~~×~~प्रस्तुत~~×~~की~~ से सम्पन्न पात्र "टाईप नहीं हो सकता । उसका अपना निजी व्यक्तित्व होना चाहिए । टाइप पात्र समाजगत आशा - आकांक्षा, सुख-दुःख, रूचि-अरूचि आदि के प्रतिनिधि होते हैं । इस कारण पाठक उनमें अपनी समस्याओं को देख पाता है और

---

1. ﴾ कुछ विचार, पृ0 - 76 - 77 ﴿

उनके साथ सरलतया तादात्म्य स्थापित कर लेता है । स्थापित मूल्यों के अनुकूल होने के कारण ऐसे पात्र पाठकों को यथेष्ट रूप में प्रभावित करते हैं । प्रगतिवादी उपन्यासों में गतिशील पात्रों का ही चित्रण होता है । क्योंकि उनके माध्यम से वर्ग की भावनाओं की अच्छी अभिव्यक्ति हो सकती है ।

(2) गतिशील पात्र :- अच्छे उपन्यासों में गतिशील पात्रों का ही चित्रण होता है । गतिशील पात्र आरम्भ में जो रहता है, वही अंत में नहीं रह जाता । उस पर अपनी परिस्थितियों एवं अपने परिवेश का प्रभाव पड़ता है । वह अपनी परिस्थितियों को बदलने का प्रयत्न करता है और यथावसार परिस्थितियों के अनुसार बदले भी जाता है । स्थिर पात्रों के समान इनका कोई रूप निर्धारित नहीं रहता और इनके विकास की कोई सीमा नहीं रहती । स्थिर पात्र टूट सकते हैं, किन्तु बदल नहीं सकते, जबकि गतिशील पात्र अपने आप को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने का प्रयत्न करता है । आंतरिक कारणों पर प्रकाश डालते हुए वह असंख्य अनुभूतियों को योजित कर सकता है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्रों की योजना अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होती है ।

पात्रों का नया प्रकार आधुनिक उपन्यास की विशेषता है जिसे प्रतीक पात्र कहते हैं । प्रतीक पात्र उपन्यासकार के विचार, जीवन - दर्शन आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं । यदि ये प्रतीक पात्र विचार और जीवन - दर्शन के वाहन - मात्र होते हैं तो उबाने वाले सिद्ध होते हैं । किन्तु यदि ये युग - सत्य के उद्घाटन के साधन बनकर आते हैं, तो पाठकों पर इनका आत्यंतिक प्रभाव पड़ता है । युग - चेतना की अभि-व्यक्ति के ये अच्छे साधन होते हैं, परन्तु इनकी योजना में अधिक सावधानी रखनी होती है ।

पात्रों के चित्रण में उपन्यासकार का सहृदयता के लिए उसे अपने पात्रों का गला नहीं घोटना चाहिए ।

(ङ) <u>चरित्र - चित्रण की रीतियाँ :</u>

पात्रों का चरित्र-विवेचन किन - किन रीतियों से हो सकता है, इस सम्बन्ध में विद्वानों में अधिक विवाद नहीं रहा है । डॉ० श्रीमती इन्दु शुक्ला के हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार - पात्रों चरित्र - चित्रण तीन प्रकार से ही हो सकता है -- (1) पात्रों के कार्यों द्वारा (2) उनकी बातचीत के द्वारा तथा तथा (3) लेखक के कथन और व्याख्या के द्वारा । पहले दो को नाटकीय या अप्रत्यक्ष चरित्र -चित्रण ।"(1)

1. डॉ० इन्दु शुक्ला "चरित्र सृष्टि और प्रमुख पात्र में - पृ० 125
(हिन्दी साहित्य कोश, पृ० 447 का लेख)

हिन्दी के कई शीर्षस्थ विद्वानों ने इन्हीं शैलियों को मान्यता दी है ।"(1) नाटकीय शैली में उपन्यासकार अपनी ओर से मौन रहता है । पात्र स्वयं ही विभिन्न परिस्थितियों में फँसकर अपनी दुर्बलताओं को प्रकट कर देते हैं । पात्र के पारस्परिक वार्तालाप के द्वारा उनके चरित्र की ऐसी गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं जो उपन्यासकार की स्थिति सर्वज्ञ की भाँति होती है । वे पात्रों के मनोवेगों, विचारों एवं प्रकृति के विषय में जैसा देखता है, उसका तटस्थ रूप में विश्लेषण करता चला जाता है । कभी - कभी उपन्यासकार तटस्थता को छोड़कर स्वयं अपना निर्णय भी दे बैठता है ।

उपर्युक्त शैलियों में अमुक शैलियाँ आधुनिक है अथवा एक शैली सर्वथा दूसरी से निरपेक्ष रूप में आती है, क्योंकि उपन्यासकार किसी एक शैली के लिए प्रतिबद्ध नहीं होता । एक सफल उपन्यासकार अवसरानुकूल दोनों शैलियों का प्रयोग करता है । उसका प्रमुख उद्देश्य अपने पात्रों को अधिक स्वभाविकता, सजीवता एवं मौलिकता से प्रस्तुत करने का होता है । "हिन्दी साहित्य कोश" के संपादक का भी यही विचार है कि - "नाटकीय चरित्र - चित्रण जितना ही व्यंजनापूर्ण और संक्षिप्त होता है उतना ही अधिक प्रभावशाली । परन्तु चरित्र की आन्तरिक सूक्ष्मताओं और मनो - वैज्ञानिक रहस्यों को इस शैली में उतने स्पष्ट और असंदिग्ध रूप में उपस्थित नहीं किया जा सकता जितना विश्लेषणात्मक शैली में सम्भव है । उपन्यास के चरित्र - चित्रण में अभिनायात्मक तथा विश्लेषणात्मक शैलियों को मिलाकर चरित्र - चित्रण अधिक विशद रूप में किया जा सकता है । -- सुविधानुसार उपन्यासकार नाटकीयता और विश्लेषण का समुचित समन्वय करके मानवीय मनोवेग, भावावेश, विचार, भावना, उद्देश्य, प्रयोजन आदि का सूक्षम से सूक्षम आकलन कर सकता है । "(2) आजकल इन दोनों शैलियों के सम्मिलित रूप को केन्द्र में रखकर उपन्यासों में चरित्र - चित्रण के विविध नवीन प्रयोग के लिए किए जा रहे हैं ।

(ई) कमलेश्वर जी के उपन्यासों में चरित्र - सृष्टि :

" कमलेश्वर नये उपन्यासकारों की उस पीढ़ी के लेखक हैं, जिन्होंने जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल और इलाचन्द्र जोशी की रूढ़ कथा चेतना को नवीन और स्वस्थ

---

1. डॉ० इन्दू शुक्ला "चरित्र - सृष्टी और प्रमुख पात्र में -पृ० 125
   "शिवनारायण श्रीवास्तव, "हिन्दी उपन्यास" पृ० 448
2. हिन्दी साहित्य कोश, पृ० 448

सामाजिक भूमि देने की चेष्टा की है । यह सामाजिक भूमि स्वाधीनता के बाद भारतीय इतिहास में उभरने वाली भूमि है , जो एक ओर अपने. आप में विशिष्ट है, तो दूसरी ओर शेष संसार से जुड़ी हुयी थी ।"﴾1﴿

कमलेश्वर ने लघु उपन्यास लिख कर बहुत कुछ कह दिया है । इनके लघु उपन्यास में पात्रों का उचित चित्रण किया है । प्रेमचन्द जी से पूर्व तो काल्पनिक कलाबाजी का ही महत्व था और चरित्र प्राय: असाधारण ﴾अतिमानव या अति दानव﴿ रूप में प्रस्तुत किए जाते थे । प्रेमचन्द जी ने उपन्यासों में जनसामान्य के बीच से उठाकर पात्रों को प्रतिष्ठित किया - उसमें मजदूर, किसान, जमींदार, नौकरपेशा सभी तरह के लोग अपने स्वाभाविक रूप में स्थान पाने लगे किन्तु प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासों में पात्रों के बाह्य रूपाकार, परिस्थिति एवं संघर्ष के अंकन की प्रवृत्ति मुख्यतया परिलक्षित होती है, पात्रों के मन की आवाज भी कभी - कभी पाठकों तक पहुंचती हैं किन्तु इसके पश्चात जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल और इलाचन्द्र जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लेखन से उपन्यास - साहित्य में विशेष परिवर्तन दृष्टिगत होता है । कमलेश्वर जी इनके बीच प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं । इस प्रकार उनके उपन्यासों में एक और "टाइप" पात्र अपनी ; अमिट छाप पाठक के मन पर छोड़ जाते हैं तो दूसरी ओर कुछ व्यक्तिवादी पात्र अपने अन्तर्द्वंद्व एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से स्वतंत्र रूप से विकसित होते देखे जा सकते हैं ।

﴾3﴿ <u>पात्रों के नामकरण द्वारा चरित्र - चित्रण :</u>

कमलेश्वर जी के उपन्यास के पात्र "यथा नाम तथा गुण" की कहावत चरितार्थ कर सकें किन्तु उपन्यास जगत में अनेक ऐसे पात्र मिल सकते हैं जो अपने नाम की सार्थकता सिद्ध कर दें । उपन्यासकार जाने - अनजाने नामकरण करते समय वह उनकी चारित्रिक - विशिष्टताओं का उद्घाटन कर देता है ।

चरित्र - चित्रण का यह सबसे सरल रूप है --

" The simplest form of characterization is naming, Each application is a kind of vivifying, animating and individuating ! "
2

---

1. कृष्ण कुरडिया, मधुकरसिंह - कमलेश्वर - पृ0 200
2. डॉ0 इन्दुमती शुक्ल - पृ0 नं.-128 (Welleck; The Theory of literature, Page No. 226- 27)

कमलेश्वर जी के उपन्यासों में भी अनेक ऐसे पात्र दृष्टिगत होते हैं जिनके चरित्र की प्रमुख विशिष्टताओं को उनके नाम द्वारा प्रकट कर दिया गया है । कहीं पात्रों के गुणों के अनुरूप चरित्र - चित्रण किया है ।

(ऊ) उपन्यासों में मुख्य पात्रों का परिचय :

(1) एक सड़क सत्तावन गलियाँ :

कमलेश्वर जी ने समयोत्तर पूर्व की कस्बाई जिन्दगी का अत्यन्त स्वाभाविक एवं मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया है । इसमें मैनपुरी कस्बे का जीवन अत्यन्त सजीव रूप से हुआ है । इस रचना में नायकत्व का ह्रास हुआ है । सरनामसिंह, रंगीले और रविराज ये तीनों खण्डित व्यक्तित्व को लिये हुए हैं । यही स्थिति इस में नारी पात्रों की हुई है । वंशी हेम और कमला तीनों का रूप और पद नायिका जैसा ही है । ये तीनों एक संयुक्त पद की पूर्ति करते हैं । छोटे से कसबे को नजदीक से देखी जिन्दगी यही है । उनके साथ उनके दुख, दर्द, आशा, निराशा और पीड़ा व्यथा की यह कहानी है । इस रचना के सभी पात्र उस वर्ग के सदस्य है । जिन्हें किसी न किसी रूप में समझाया गया है । इस उपन्यास के मास्टर हबीब, सरनाम और वंशी ऐसे पात्र हैं जिनका योगदान मायने रखता है ।

(क) मास्टर हबीब :- इस उपन्यास में मास्टर हबीब जैसे समाज से लड़ते - लड़ते "रेणु" के कितने चौराहे में आकर मास्टर हफीज हो जाते हैं । हफीज साहब जो जनता की निगाह में पागल हो गये लेकिन हिन्दू - मुस्लिम दंगे में किसी ने उन पर किरोसीन डालकर आग लगा दी । मास्टर हबीब एक समाज सुधारक का काम करते थे । उन्हें लोगों के प्रति बहुत ही दया भाव था ।

(ख) सरनाम और वंशी :- कमलेश्वर जी ने इस रचना में सरनाम और वंशी इन दोनों के चरित्र को बड़ी ही सहजता से ढाला है । दिखाई देने के लिए दोनों के व्यक्तित्व ऊपर से बड़े ही कठोर हैं, पर भीतर ही भीतर फूलों से कोमल हैं । सरनाम के बारे में वंशी का यह कथन उचित ही है, "कि जब वह आँखों के सामने होता, उसका होना अनुभव में होता है तो प्रतिहिंसा धधकती रहती, आँख ओट होते ही जतीयता भरी छटपटाहट सुलगने लगती है । न उसका जीना सह पाती थी और न मरना । "(1) वंशी उनके संगीत पर मुग्ध है, पर वही उसे अपने घर से निकाल कर उस पर आक्षेप

---

1. कमलेश्वर - एक सड़क सत्तावन गलियाँ, पृ0 385

भी लगाता है जो सर्वथा झूठा है । इस सरनाम का चरित्र एक ठोस धरातल को लिए हुए हैं । बंशी से वह नफरत भी करता है तो उतना प्यार भी करता है, पर बंशी का प्यार द्विधाजनक है ॥सरनाम जब पुलिस से बचने के लिये बंशी के घर में घुसता है तो बंशी उसे घर से निकाल बाहर करती है और वह पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है । और फिर सरनाम बसरी के बच्चे को गोद लिये अस्पताल से लौट रहा है । और बंशी उसकी चट्टान सी पीठ को निहारती चली आ रही है, और सोच में पड़ जाती है की क्यों झूठा इल्जाम लगाया उसने इसी सरनाम पर ।

कई पात्र इसमें ऐसे भी हैं जो शोरगुल में गुम हो गये जिनके टूटने की आवाज भी नहीं आयी । इनमें कमला, शिवराज, बाजा मास्टर, हफीज साहब और निर्मी जैसे व्यक्ति हैं । अनेक पात्रों के होते हुए भी लेखक ने उन सबको अत्यन्त सूत्रता में बाँधकर प्रस्तुत किया है कि कहीं पर न तो बिखराव है और न असम्बन्धता ।

॥2॥ डाक बंगला :- उपन्यास में इरा और तिलक मुख्य पात्र हैं बतरा विमल, सोलंकी और डाक्टर गौण पात्र है ।

॥1॥ इरा :- "इरा" मध्यवित्तीय परिवार की लड़की है । उसके पिताजी पुराने खयालात के हैं । उन्हें इरा का नाटक कंपनी में काम कराना बिलकुल पसंद नहीं है । जबकि इरा को नाटक में कारना बहुत अच्छा लगता है । इरा को इसी बीच एक नाटक प्रेमी विमल ने रंगमंच का प्रलोभन देकर अपनी वासना का शिकार बनाया । बाद में विमल की स्थिति ब बिगड़ने पर विमल एक जगह इरा को टयूटर की नौकरी दिलवा देता है । उस दौरान विमल को इरा के चरित्र पर शक होने से उसे छोड़कर चला जाता है । इसके बाद "इरा" के जीवन में और तीन पुरुष आये । बतरा, सोलंकी और डाक्टर । इन चारों के प्रति अपनत्व और आकर्षण उसे रहा । हम उसे प्रेम नहीं कह सकते । इन चार पुरुषों में डाक्टर के पास वह विशेष स्थितियाँ लाकर छोड़ी गयी थी । झूठे आदर्श और प्रेम को इरा स्वीकार नहीं करती । उसने कहा भी है, " हर बात को आदर्श के पर्दे में रखकर मत देखो, तिलक ! गन्दी चीज पर पर्दा डाल दो तो उसकी झिल-मिलाहट खूबसूरत लगती है । इसलिए आदर्श का जामा जिन्दगी को मत पहनाओ ।"॥1॥

---

1. कमलेश्वर - डाक बंगला - पृ0 35

इसमें सन्देह नहीं कि विमल के प्रति विशेष आकर्षण रहा इरा को । उससे बिछुड़कर भी वह भूल नहीं पायी । किन्तु विमल ने उससे जो व्यवहार किया वह क्षम्य नहीं है । विमल ने बतरा के यहाँ नौकरी में लगवा देता है । बतरा आधुनिक दलाल है ।

बतरा, सोलंकी और डाक्टर के साथ रहते हुए उसने प्रेम से अधिक उन्हें करुणा ही दी है । हर बार वह गत जीवन को काटकर फेंक देती है । और नयी जिन्दगी शुरू करती है । बतरा के साथ जिन्दगी का दूसरा मोड़ उसने शुरू किया । बतरा ने उसके साथ रहकर जी भर कर उससे खेला है । उसने सारे ऐश और आराम उसे दिये वह गर्भवती रहती है । बतरा उसका गर्भपात कराता है और शीला आकर उसे घर से निकाल देती है । आगे बतरा इरा को डॉक्टर चन्द्रमोहन के साथ आसाम भेज देता है । जहाँ डाक्टर के साथ उसका विवाह होता है । और वहीं पर वह विधवा बन जाती है । जिन्दगी को फिर नया मोड़ मिलता है । इरा तिलक और सोलंकी के सहवास में आती है । पर सोलंकी से अधिक तिलक से ही वह धुल मिल सकी । तिलक से वह कहती है, " जिसे मैंने सब कुछ बताया है, उससे शादी न कर सकी क्योंकि मैं यह नहीं कह सकती कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो । जो भी मेरी जिन्दगी में आया उसने जाने अनजाने घुमा फिराकर या सीधे - सीधे या हमेशा यही जानने की कोशिश की मैंने पहले किसी से प्यार तो नहीं किया ... पुरुष का सबसे बड़ा सन्तोष है और हर बार मैंने अपने हर प्रेमी से यही कहा कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो, तुम प्रथम हो ।"(1) आखिर में इरा अकेली रह जाती है । और वह किसी को बताये बिना डाकबंगला छोड़कर कहीं चली जाती है ।

इरा के पात्र के माध्यम से इरा इसी सत्य को स्पष्ट करती है कि -- इस कमीनी दुनियाँ में औरत बिना पुरुष के रह नहीं सकती उसे एक कवच चाहिए उसने कहा भी " हर लड़की एक कवच ढूँढ़ती है । वह चाहे पति का हो, भाई या बाप या किसी झूठे रिश्तेदार का । इस कवच के नीचे वह अच्छी या बुरी हर तरह का जीवन बिता सकती है । उसे पहनने के लिए जैसे एक साड़ी चाहिए वैसे यह कवच भी चाहिए।"(2) जीवन की इस राह पर अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिये और अपने आपको बनाये रखने के लिए एक सुशिक्षित युवती को किन - किन समस्याओं से होकर गुजरना पड़ता है उसका मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है ।

---

1. कमलेश्वर - डाक बंगला - पृ0 8 75
2. पूर्वोक्त - पृ0 45

§2§ विमल :- इस उपन्यास का दूसरा पात्र "विमल" है । विमल एक नाटक रंगमंच पर काम करता है । वहीं पर उसे इरा नामक युवती से परिचय होता है । दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं । इरा अपने पिताजी का घर छोड़कर विमल के साथ रहना पसंद करती है । अचानक विमल की स्थिति खराब हो जाती है । और वह इरा को बतरा के घर ट्यूटर की नौकरी दिलवा देता है । एक दिन अचानक उसे इरा के चरित्र में पर गलत शंकाए होने लगती है । और वह छुप-छुप कर इरा को देखने बतरा के घर पहुंच जाता है । और एक दिन वह इरा को छोड़कर चला जाता है । एक दिन अचानक आखिर में किसी बिमारी से पीड़ित वह इरा के पास आता है । किन्तु इरा उससे मिलना नहीं चाहती । और इस प्रकार विमल अकेला रह जाता है । विमल एक ऐसा पात्र है जो आर्थिक परिस्थिति से घबराकर इरा को नौकरी के लिए मजबूर करता है और बाद में छोड़कर चला जाता है ।

§3§ बतरा :- इस उपन्यास में "बतरा" एक आधुनिक दलाल है । सम्बन्धों को बनाना और तोड़ना यही उसका काम है । सम्बन्धों को बनाये रखने के लिए वह औरतों के उपयोग को जायज मानता है । अफसरों से दोस्ती कर वह व्यापारियों का काम करता था । और सिक्रेटरियों की बीबियों और प्रेमिकाओं से उसके निकट के सम्बन्ध थे और उन लोगों की कमजोरियों को वह जानता था ।शीला नामक युवती से उसे इस काम में सदा सहायता मिली । बतरा इरा की कमजोरियों का फायदा उठा लेता है । बतरा ने इरा के साथ रहकर जी भर कर उसके साथ खेला है । इरा जब गर्भवती हो जाती है तब वह गर्भपात करवा देता है । बतरा है खरीददार अर्थ और काम दोनों का उसकी पीढ़ी पर बोर्ड लगा है खरीदार है, औरत से लेकर आयल इन्जन तक, सब कुछ खरीदना है और बिकाऊ है चाहे बतरा खरीदे या और कोई । बतरा इरा को बाद में चन्द्रमोहन के साथ आसाम भेज देता है । इस प्रकार बतरा पहले लड़की का उपयोग खुद करता है बाद में वह दूसरे हाथ सुपुर्त कर देता है । यही उसका काम है ।

§4§ तिलक -- इस उपन्यास में तिलक" और इरा शुरू से लेकर अंत तक उनका चित्रण हुआ है । तिलक काश्मिर घूमने के लिए एक डाक बंगले में रुके थे । वहीं इरा से उनकी मुलाकात हुई । वे दोनों साथ - साथ घुमने जाते थे । और इरा अपनी बीती हुई बातें सब तिलक को सुनाती थी । तिलक इरा की ओर आकर्षित हो जाता है । और वह इरा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है । किन्तु इरा कहती है कि, "जिसे मैंने सब कुछ बताया है, उससे शादी नहीं कर सकती क्योंकि मैं यह नहीं कह

सकती कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो ? और इस प्रकार इरा तिलक के प्रस्ताव को नामंजूर कर देती है । आखरी में जब इरा चली जाती है तब तिलक उसे ढूँढ़ने की कोशिश करता है । और आखिर में वहीं डाक बंगले पर आकर रूकता है और इरा की प्रतिक्षा करता है ।

(5) सोलंकी :- सोलंकी काश्मिर में इरा के साथ मुलाकात होती है । वह घोड़े पर सवार होकर और एक मिलिट्रीमेन की तरह आता है । सबसे पहले तो बतरा ने क्लब से लौटते समय सोलंकी को मुलाकात इरा से करवाई थी । उसके बाद कश्मिर में मुलाकात हूई थी । सोलंकी भी इरा के प्रति आकर्षित होता है किन्तु इरा सोलंकी के चंगुल में नहीं आ पाती । और सोलंकी भी आखिर में इरा की तलाश में रहता है और तिलक से पूछता है कि इरा मिली थी । तिलक का जवाब सुनकर निराश हो जाता है ।

(6) शीला :- शीला एक मध्यम परिवार की लड़की थी । उसके माता - पिता की मृत्यु के बाद भाई - बहन की जिम्मेदारी उस पर आ जाती है । बाद में वह बतरा के चंगुल में फस जाती है । और वह अपना शरीर बेचकर अपने भाई - बहन का पेट भरती है । शीला इरा को जब बतराके घर देखती है तब वह इरा को घर से निकाल देती है । शीला रोज नये - नये नाम से जानी जाती है । बतरा शीला का बचपन का दोस्त था फिर भी वह शीला से शारीरिक संबंध रखता है ।

शीला के पात्र के द्वारा इस उपन्यास में नारी कूटूंब का गुजरान चलाने के लिए उसे किन - किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और वह एक वेश्या के जीवन की तरह उसका जीवन हो जाता है ।

(3) काली आँधी :- इस उपन्यास के पात्र मालती और जग्गीबाबू है । सबसे पहले हम मालती के बारे में चर्चा करेंगे ।

(1) मालती :- "काली आंधी" उपन्यास की मुख्य नायिका मालती है । उसका प्रभावी व्यक्तित्व ही सम्पूर्ण रचना में छाया हुआ है । मालती जब राजनीति में प्रवेश करती है तब उसे बहुत बड़ी सफलता मिलती है । इस क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात् असफलता क्या है यह मालती ने कभी जाना ही नहीं । जिस क्षेत्र में हाथ डाला उसे यश ही मिला । इसमें सन्देह नहीं कि इस यश और सफलता को प्राप्त करने के लिए

मालती को भिन्न स्तरों पर अनेक प्रयास करने पड़े । मालती ने सफलता प्राप्त करने के लिये उसने हर सम्भव प्रयास किया और हर मार्ग को अपनाया । अपने चातुर्य के बल पर मालती सफलता के उच्च शिखर पर बहुत शीघ्र पहुँच गयी । राजनैतिक जीवन में उसे सफलता तो मिली किन्तु उस धापा-धापी में अपने कौटुम्बिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में वह असफल हुई । राजनीति में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने वाली मालती अपने ही पारिवारिक जीवन में असफल हो जाती है । अपने पति जग्गी बाबू और अपनी बेटी लिली का साथ छूट जाता है । उसकी राजनैतिक भूख ने इसकी परवाह नहीं की किन्तु जब कभी वह कुछ क्षण के लिये नितान्त अकेली रहती तब उसे अपने बच्चे का वियोग त्रासदायक लगता है ।

मालती जब चुनाव के दिन होटल में रूकती है तब उस होटल के मैनेजर जग्गी बाबू होते हैं । यह जानकर मालती का दिल बैठ जाता है । अब और जब चुनाव जीत जाती है, उसी दरम्यान लिली आती है । जीत की खुशी में जब पार्टी रखी जाती है तब लिली का ओटोग्राफ लेना उसे अच्छा लगता है किन्तु उसे यह मालूम नहीं था कि लिली उसकी बेटी है । जानने के बाद उसे बड़ा अफसोस हुआ और जग्गी बाबू से लिली को अपने साथ ले जाने की माँग की । किन्तु जग्गी बाबू ने साफ इन्कार कर दिया ।

इस उपन्यास में नारी स्वतंत्रता मिलने पर उसे यश पाना अच्छा लगता है और उसी यश में अपने परिवार को वह खो बैठती है ।

(2) जग्गी बाबू :- मालती के स्वभाव के विपरीत जग्गी बाबू हैं जिन्हे न राजनीति से लगाव है और न झूठी प्रतिष्ठा से मालती पर राजनीति का नशा कुछ ऐसा हावी हो जाता है कि वह जग्गी बाबू की परवाह ही नहीं करती । जग्गी बाबू एक स्वाभिमानी व्यक्ति है और इस कारण दोनों के बीच तनाव दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है । मालती के बदलते हुए जीवन को देखते हुए जग्गी बाबू को यह एहसास होता है कि राजनीति अत्यन्त घृणास्पद, स्वार्थयुक्त और झूठी होती है । जग्गी बाबू का स्वाभिमान उन्हें कहीं पर भी समझौता नहीं करने देता । वे इस बात को भली भाँति जानते हैं कि उच्च वर्गीय जिन्दगी कितनी खोखली और झूठी है । वहाँ केवल दिखावा और आडम्बर है । वे किसी मूल्य पर मध्यवित्तीय पारिवारिक जिन्दगी को छोड़ने को तैयार नहीं उन्हें सदा संघर्ष करते रहने में ही आनन्द है ।

न तो वह अवसर वादी ही हैं और न स्वार्थी । बल से फायदा उठाना और कमजोरों का शोषण उन्हें मान्य नहीं इसीलिए उन्होंने अपनी पत्नी मालती से स्पष्ट कहा, " मैं तुम्हारा पति हूँ । फायदा उठाने वाला गैर आदमी नहीं सोचो क्या बात कही ? तुमने कोई गलत बात तो नहीं कही, अगर एक औरत इस लायक हो जाये तो इसमें पति पत्नी का रिश्ता ... क्या कह रही हो तुम ? " ﴾1﴿

जग्गी बाबू का यह वाक्य स्पष्ट करता है कि उन्हें कहीं पर भी अपनी ही पत्नी से फायदा उठाने की अवसरवादी बात मान्य नहीं ।

जग्गी बाबू ने अपनी बेटी को होस्टल में रखकर उसे पढ़ाया और उसे अपने पास ही रखा । जग्गीबाबू बड़े ही धीरजवान और कुशल पात्र है जिन्होंने दूसरा विवाह न करके अपनी बेटी के भविष्य के बारे में विचार किया है ।

﴾4﴿ आगामी अतीत :- इस उपन्यास के पात्र चंदा, चांदनी, कमल बोस है ।

﴾1﴿ चंदा :- चंदा एक वैद्य जी की बेटी थी । वह हमेशा रोज दूर - दूर जाकर कई तरह के पत्ते, जड़ी - बूटियाँ तोड़कर अपने पिता के लिए लाती थी । उसके पिताजी उसकी दवाईयाँ बनाते थे ।

चंदा को कमल बोस नामक युवक से मुलाकात हुई । उस युवक को पांव में मोच आ गई थी । चंदा भी अपने पिताजी को देख देख कर सीख गई थी और कमल बोस के पांव को देखकर बोली कि "आपका दर्द कैसा है ? कहते हुए उसने मोच वाली जगह पर अँगुली रखकर दबाया था, तो कमल धीरे - से चीख पड़ा था । फिर हँसकर वह बोली थी -- "तारपीन का तेल तो ठीक है, पर इसका दर्द बिलकुल खींच लेने के लिए अंडी का पत्ता बाँध लेते तो बहुत आराम मिलता ।"﴾2﴿ इस तरह की बाते सुनकर कमल ने कहा तुम तो पूरी डॉक्टरनी बन गई हो ! चंदा ने कहा कि आखिर वैद्य जी की बेटी हूँ ।

चंदा कमल से प्यार करने लगती है । और कमल भी चंदा से बहुत प्यार करता है । कमल जब डॉक्टरी पास करने को कलकत्ता जाता है तब चंदा उसे मिलने रात को जाती है तब कमल उसे छेड़ने के लहजे में कहता है कि " अगर लौटकर न आया तो !"

---

1. कमलेश्वर - काली आँधी - पृ0 10
2. आगामी अतीत - कमलेश्वर - पृ0 31

तब चंदा कहती है कि " देखो, मुझे तुमसे ज्यादा अपने पर विश्वास है । मैं जानती हूँ, तुम लौटकर जरूर आओगे । किस दिन आओगे, यह तुम पर है । यह रात साक्षी है, इस बात की कि इस रात में पास - पास होते हुए भी हम मिले नहीं हैं । इस मिलन के लिए अब हर रात जागती रहेगी । कौन - सी रात सोयेगी, यह तुम तय कर देना ।" यह बात कहकर चंदा की आँखें डबडबा आयी थीं । फिर चंदा ने ही कहा था, " कोई बोझ लेकर मत जाना । अगर तुम नहीं भी आये, तो मैं तुम्हें कभी याद दिलाने नहीं आऊँगी । इतना अहं लेकर ही तुम्हें प्यार कर पायी हूँ ।"﴾1﴿ चंदा ने कमल की राह देखने में उसकी जिन्दगी बरबाद हो जाती है । बिरादरी में बदनामी के कारण उसके साथ शादी कौन करता ? यह प्रश्न उसके सामने खड़ा हो गया । चंदा घर से बाहर निकलती तो छेड़नेवाले फ़ब्तियाँ कसते - "डाक्टरनी जा रही हैं । वैद्य की लड़की डाक्टरनी ! लोग उसे "डाक्टरनी" कहके चिढ़ाने लगे थे । ﴾2﴿ उसके बाद चंदा की शादी जैसे - तैसे एक लँगड़े हरकारे से उसकी शादी कर दी जाती है । वह उम्र में काफी बड़ा था । चंदा की शादी के बाद उसके पिताजी की मृत्यु हो जाती है । चंदा का आदमी दस - पंदरह दिनों के लिए जंगलों में गश्त के लिए चला जाता है । एक दिन जाता है तो वह लौटकर नहीं आता । उसे किसी जानवर ने खा डाला था । चंदा लाश देखने तक नहीं गई । लोगों ने कहा वह उत्तर वाले जंगल में डाक्टर जादू - टोना कर गया था । सब लोग कहते हैं कि --

" हाँ, जादू - टोना ! बाद में सब पता चला न । वह डाक्टर उसे जंगल में ले जाता था । वह जड़ी - बूटियाँ बीनने के वहाने जाती थी । बाद में उसने जड़ी - बूटियाँ बीनना भी बंद कर दिया । उसका आदमी मरा, तो लाश खोजने भी नहीं गयी । क्या कहा जाये ऐसी औरत को । ऐसी पत्थर - दिल औरत कि अपने आदमी की लाश तक के लिए जंगल में नहीं गयी । आदमी तो फिर भी आदमी है, साहेब ! " चंदा वह गाँव छोड़कर चली गयी थी । बाद में उसके बहुत खराब दिन बीते और उसने अपने आप अपनी जिन्दगी खराब की । उसका जो हाल हो गया था, वह भी देखकर दुख लगता था । उसका आदमी मरने के बाद चंदा को खाने - पीने की भी मुसीबत आ गयी थी । उसकी बच्ची के लिए तीन - चार महीने उसके गाँव के लोग दूध पहुँचाता रहा । उसके बाद बच्ची को लेकर चली गयी । वहाँ के लोग चंदा को बहुत बड़ा मानते

---

1. आगामी अतीत - कमलेश्वर - पृ0 31

2. पूर्वोक्त - पृ0 42

थे वे कहते थे - "उन जैसी औरत होनी मुश्किल है, बाबू ! साक्षात देवी थीं । यहाँ, इसी कोठरी में रहती थीं । नियम से किराया देती थीं... गरीबों को दवादारू मुफ्त दे देती थीं । बैद्क उन्हें बहुत अच्छी आती थी ... ।"§1§ चंदा वहाँ से भी चली गयी । दूसरी जगह जाने के बाद उसका दिमाग पगला गया था । और वह पागल हो गयी थी और उसकी मृत्यु हो गयी । उसकी बेटी चांदनी कहीं चली जाती है । चंदा का सारा जीवन दुखमय व्यतित होता है । उसे जीवन में कोई सुख नहीं मिलता ।

इस उपन्यास में भारतीय नारी का सचोट वर्णन किया है ।

§2§ चाँदनी :- चांदनी चंदा की बेटी है । उसके पिताजी बचपन में ही गुज़र गए उसके बाद उसे दर - दर की ठोकरें खाने पड़ी । माँ की पागल हालत से वह और भी परेशान हो गयी थी । चांदनी विवशता के कारण उसे अपना व्यवसाय कोठे पर बैठने का शुरू करने पड़ा । उस कोठे पर बैठने के बाद चांदनी का व्यवहार एक दम बदल जाता है । उसे हमदर्दी पर बहुत गुस्सा आता है । ऐसे में एक दिन कमल बोस खोजते हुए चांदनी के पास आ जाते हैं । किन्तु चांदनी का यह कथन उसकी यथार्थ स्थिति और विवशता को सहज ही में प्रकट करता है।" हाँ ठीक कह रही हूँ । तुम अमीरों के ये इश्क - विश्क के चोंचले अपने लिये बेकार हैं । हम इश्क नहीं करते पेट भरते हैं पेट । पाँच मिनट में एक आदमी फारिग होता है .... समझे ... चले आते हैं मरदुए इश्क लड़ायेंगे .... अबे यहां धन्धा होता है धन्धा । इश्क नहीं .... अगली बार आना बच्चू तो जेब गरम और कमर पुख्ता करके आना ।"§2§ चाँदनी का कथन उसके यथार्थ भोगे हुए जीवन की कटु अभिव्यक्ति है जीवन को वह किसी तरह से जी ही नहीं रही बल्कि पूरे संघर्ष के साथ जुटी हुई है । उसने तो किसी से शिकवा है और वह न ही शिकायत । जो कुछ वह अब तक देखते और सहते हुए आयी है उसके कारण उसके व्यक्तित्व में एक अजीब सी धारा आ गयी है । अपनी विवशता को प्रकट करते हुए चांदनी ने जो कहा वह ठीक है ।" अच्छा अब तू जाता है कि नहीं । पिण्ड तो छोड़ । जैसे तैसे पेट पालते हैं हम लोग । क्यों पेट पर लात मारने चला आता है ।"§3§ इस कथन से चाँदनी उस वर्ग की व्यथा, पीड़ा और दयनीय स्थिति का चित्रण स्पष्ट रूप से किया है । चाँदनी का यह कथन न केवल उसके आक्रोश असन्तोष या व्यथा को व्यक्त करते हैं बल्कि प्रेम केवल भौतिक या शारीरिक हद तक ही सीमित नहीं रहता

---

1. आगामी अतीत - कमलेश्वर - पृ० - 64
2. पूर्वोक्त - पृ० 67 - 68
3. पूर्वोक्त - पृ० 76

उसका आर्थिक पक्ष भी रहता है, यह बताता है वर्तमान युग भी आर्थिक विषमता ने चाँदनी के वर्ग को कितना त्रस्त कर दिया और वह वर्ग किस भीषण स्थिति को पहूँचा है उसे प्रभावी ढ़ंग से स्पष्ट किया गया है । आज चाँदनी सन्दर्भ में प्रेम न तो अलौकिक आनन्द को देने वाला है और न ही शारीरिक बल्कि वह जीवन गुजारने का आर्थिक साधन बन गया है । यही अर्थ जो आज समाज का आधार बन गया है, वर्ग का निर्माण करता और इसी कारण वर्ग संघर्ष की बात पैदा होती है । चाँदनी कमल बोस की बेटी बनना पसंद नहीं करती । जब उसे पता चलता है कि यही वह आदमी है जिसने मेरी माँ चंदा की जिन्दगी बरबाद की थी । और वह एक दम कमल का शर्ट पकड़कर चीख उठती है कि - "तुम ! डाक्टर । वही डाक्टर हो जिसने मेरी माँ की जिन्दगी चौपट कर दी .... ।"(1) चाँदनी गुस्से होकर चली जाती है । और वह जब दिमाग ठंडा हो जाता है तब चंदा के पास जो तस्बीर होती है वह लेकर दौड़कर आती है । और उस फोटो के साथ कमल का चहेरा मिलाती है । बाद में वह कमल के साथ नहीं जाती वह कहती है कि - "फैसले के वक्त पीछे छूट गया था ।" अब फैसला करने का क्या फायदा । और वह फिर अकेली हो जाती है ।

चांदनी के पात्र के जरिए वेश्या एक बार पर पुरुष के साथ सोती है तब उसे पुरुष के बिना नहीं चलता चाहे उसे कोई बेटी बनाने को तैयार हो ।

(3) कमल बोस :- चाँदनी के बाद इस लघु उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण चरित्र है कमल बोस की ।

कमलबोस जब कलकत्ता में डॉक्टरी करने के लिए जाता है तब उसे पास के गाँव में चंदा नामक लड़की से प्यार हो जाता है । दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं । कमल बोस जब डाक्टरी पास कर लेता है तब उसकी महत्वाकांक्षा उसे चैन से बैठने नहीं देती । वह हर सही गलत तरीकों को अपना कर बड़ा आदमी बनाना चाहता है और राजनीति में उसकी घुस पैठ कुछ ऐसी होती है कि वह शीघ्र हो वास्तव में वह बड़ा आदमी बन जाता है । राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये उसने कभी किसी और की बात सोची नहीं । वह तो केवल स्पर्धा के इस युग में दौड़ता रहा और सफल होता गया । क्योंकि सफल होने के लिए जिन गुणों का होना अनिवार्य है वे सब उसमें

---

1. आगामी अतीत - कमलेश्वर - पृ0 109

आने लगे यही कारण है, प्रशान्त उसके विषय में स्पष्ट कहता है — " तू फर्स्ट आया था ..... बस वहीं से तू कतई दूसरी तरफ के सपने बुनने लगा था । प्रतियोगिता इस बेहूदे कम्पटीशन की दौड़ में तू शामील हो गया था । इस मुकाबले की दौड़ में जीतने के लिए शक्ल और तेजी ही नहीं चाहिये, इसमें जीतने के लिए वे सब चीजें चाहिए जो एक सफल होने वाले आदमी के लिए बेहद जरूरी होती है । एक खूबसूरत बीबी चाहिये, पैसा चाहिए, ऊँची रिश्तेदारी चाहिए, ... और सबसे बड़ी चीज जो चाहिये वह यह कि मुकाबले की इस दुनियाँ में सफल होने के लिये, उसे दूसरों के जजबातों का कोई खयाल नहीं करना चाहिये ।"﴾1﴿ चरित्र के रूप में जहाँ कमलबोस दिखाई देता है वहाँ अन्त में उसे इस बात का दुख भी है कि जहाँ वह पहुँचा है वहाँ पहुँचने की बहुत बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ी । उसे अपने ही लोगों को खोना पड़ा । जिसमें वापस आने की उसकी चाह है पर कुछ भी करने में असमर्थ है । द्विधा और संघर्ष से पूर्ण ऐसे पात्र बहुत कम देखने को मिलते हैं । कमल बोस ने चांदनी को बेटी बनाने के जो भी प्रयास किये सभी में असफल रहें । कमल को इस बात का तो दुख था कि अगर चंदा से मेरी शादी होती तो चांदनी मेरी बेटी होती । मेरी वजह से ही चाँदनी और चंदा का जीवन बिगड़ा है ।

﴾5﴿ <u>तीसरा आदमी</u> :-

इस उपन्यास में मुख्य तीन ही पात्र हैं । उन तीन पात्रों के द्वारा उपन्यास की कहानी चलती है ।

﴾1﴿ नरेश :- नरेश एक मध्यम वर्ग का लड़का है । और घर में वह सबसे बड़ा है । घर की पूरी जिम्मेदारी उसके सर पर ही थी । वह रेडियो स्टेशन में समाचार बोलने की नौकरी करता था । उसकी शादी एक पढ़ी और नेक खानदान की बेटी चित्रा से शादी हो गई । नरेश का एक भाई सुमंत था वह रिश्ते में उसका भाई ही लगता था । ट्रेन में शादी की बिदा के बाद सुमंत चित्रा से ज्यादा घुल - मिल गया था । यह देखकर नरेश को अच्छा लगा कि हमारे घर में किसी ने तो चित्रा की कदर की । नरेश चित्रा को बहुत चाहता था । चित्रा के पास नरेश के जाने पर चित्रा एकदम सकुचा और शरमा जाती थी । नरेश को एक तरह से अच्छा भी लगता था और एक तरह से सोच रहा था था कि " मुझसे किस बात की शरम ।" जब चित्रा की बिदा का तार करके घर में

---

1. आगामी अतीत - कमलेश्वर - पृ0 46

आता है तब सुमंत को वहां बैठा हुआ देख और उसका पूछना " भैया, आप तार दे आए ?"[1] "हाँ !" नरेश ने अपने में घुटते हुए कहा क्योंकि उस क्षण वह चित्रा को खबर देना आया था । नरेश को ऐसा था कि वह चित्रा को बांहों में भर के उसे यह खुश खबरी देगा । किन्तु सुमत ने ही पहले यह खबर दे दी हैं । यह जानकर उसका मुड खराब हो जाता है । और सुमंत से ईर्ष्या हो जाती है ।

नरेश की इच्छा थी कि वह चित्रा को कहीं दूर घुमाने ले जाए और बहुत सी बातें करें किंतु चित्रा का पियर जाना नरेश को खलने लगता है ।

पियर से चित्रा का पहली बार खत आने से और उसमें लिखा था कि अब समय कटता नहीं है, यह सब पढ़कर बहुत खुश हुआ । उस खत को वह बार - बार पढ़ता था । नरेश को ... तीन - चार दिन के लिए दिल्ली - रेडियो स्टेशन में बुलाया था । नरेश बहुत खुश हुआ । नरेश ने सोचा कि अगर " मेरा तबादला भी दिल्ली हो जाए तो मैं चित्रा को लेकर रह सकुं और उसे घुमा सकूंगा । " एक ओर यह भी खयाल आता कि दिल्ली में कितनी महँगाई है । इस महँगाई में क्या करेंगें । फिर सोचा कि वह चित्रा का पढ़ाई का उपयोग करेगा । चित्रा दिल्ली में कुछ भी कर सकती है । नरेश की बहन सरला का ब्याह हो गया था । उसके बाद बाबूजी रिटायर हो चुकने के बाद घर की हालत बड़ी कमजोर हो गई थी । नरेश को लगा कि अब क्या होगा । नरेश ने दौड़-भाग करके अपना तबादला दिल्ली करवा लिया था ।

दिल्ली में वह सुमंत के पास ही ठहरा था । पहली बार जब चित्रा आई तो तीनों को एक ही कमरें में रुकना पड़ा । नरेश का वहां दम घुटने लगा था । दोनों को एकांत में जा सकने की न ताब होती और न ही इतने पैसे थे कि चित्रा को घुमाने ले जाता । एक दिन दोनों निकल ही पड़े तब नरेश को मुक्ति का एहसास हुआ था । वे दोनों बगीचें में जाकर बैठ गए और दोनों प्यार में डूब गए । किन्तु किसी के आने की आहट में चित्रा ने अपने आपको संभाला और पुलिसमैन को देखकर वह नहर के किनारे जाकर खड़ा होना नरेश को एक नितान्त अपरिचित अनुभव था । पुलिस वाले का पूछना कि यह लड़की कौन है ? और थाने चलने का कहना यह सब उसे अजीब सा लगा था । और वह पुलिसवाले से जान छुड़ाने पर उसे दो रुपये हाथ में रख दिये । नरेश चित्रा पर बहुत बिगड़ा था । और दोनों एक दूसरे से बात नहीं कर रहे थे । नरेश को चित्रा से नफरत होने लगी थी । चित्रा का सुमंत के सामने साड़ी बदलना उसके तन में आग - सी

---

1. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ० - 16

लग गई थी । चित्रा के अलगाव से नरेश यही सोचता रहता कि " यह गाड़ी इतने अनमनेपन से कैसे चलेगी ? इतने अलगाव और अजनबीपन से जिन्दगी का यह गुजरान कैसे कटेगा ?" चित्रा का प्रूफ रीडींग का काम सुमंत के साथ करना और खुद का अकेलापन महसूस करना नरेश को अच्छा नहीं लगता था ।

चित्रा का परिवर्तन नरेश को खलने लगा था । चित्रा जब चाय बनाकर लाती है और वह दो प्याला ही लाती है और नरेश को भूल जाती है तब उसी दिन शायद पहली बार अपमानित महसूस करता है । चित्रा खिसियाते हुए बोली थी " अरे, मैं तो आपको चाय देना ही भूल गई .... ठण्डी हो गई है, अभी गरम कर देती हूँ ।"§1§ नरेश बहुत पिड़ीत हुआ था और उसने कहा था, " नहीं, मुझे और जरूरत नहीं ... तुम अपना काम करो ..."§2§ नरेश का दिल्ली में आकर गरीब होना भी अजीब सा लगता है । चित्रा का सुमंत के साथ ज्यादा घुलजाना उसे अच्छा नहीं लगता था । वह एक दिन दोनों को स्टूडियो बताने ले गया था । वहाँ सब उसने समझाया । नरेश का ध्यान चित्रा के सामने ही उसके भाई के सामने नहीं था । नरेश का खयाल था कि शायद हर पुरुष अपनी प्रेमिका या पत्नी की आँखों में अपनी अतिरंजित तस्वीर देखने की कामना करता है ।

नरेश अपनी आमदनी बढ़ाने के कारण वह ओ.बी.पार्टी में अपना नाम लिखवा देता है, पर तब उसने यह नहीं सोचा था कि " मैं जिन परिस्थितियों में रह रहा हूँ, उनमें मेरा बाहर रहना मुझे ही कटता रहेगा ।"
नरेश का चित्रा को सुमंत के साथ छोड़कर जाना पसंद नहीं था । सुमंत का कहीं बाहर जाना नरेश को बहुत अच्छा लगता था । किंतु कहने पर उसका न जाना नरेश को अच्छा नहीं लगा । और वह चित्रा के साथ लड़ाई करने लगता है और सुमंत यह सब बाते सुन जाता है । नरेश ने अपना तबादला किसी छोटे स्टेशन पर करवा लिया । चित्रा नौकरी छोड़ना नहीं चाहती थी । नरेश चित्रा को छोड़कर चला आया । गुड्डू की याद उसे बहुत आती थी । चित्रा ने चिट्ठी लिखी कि वह मायके जा रही है और लौटकर दिल्ली ही जायेगी । नरेश एक बार फिर घबराया हुआ दिल्ली वापस आता है । और वह प्रेस में जाकर सुमंत से मिला । पता लेकर नये घर पर पहुँच गया । चित्रा को घर के बाहर बैठी देखकर वह चित्रा के शरीर को देखने लगता है और बच्ची को

1. तीसरा आदमी - कमलेश्वर - पृ0 39
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 40

लेटे हुए देखता है । नरेश का दोनो हाथों से चित्रा का मुंह हटाना और चित्रा का रसोई में भाग जाना और सारी रात वहीं एक कमरे में सोना उसे बहुत बुरा लगा और दूसरे दिन सुबह पटना को रवाना हो गया । नरेश को जब पता चला कि सुमंत उस दिन के बाद वापस नहीं आया और उसने आत्महत्या कर ली है । तब उसे बहुत बुरा लगा । नरेश को अब भी कोई तीसरे आदमी की छाया दिखाई दे रही है । इसी कारण उसका सारा जीवन व्यर्थ ही चला जाता है ।

§2§ चित्रा :- चित्रा इस उपन्यास की नायिका है । चित्रा नरेश की पत्नी है । वह पढ़ी - लिखी है । उसे जीवन में कुछ करने की चाह है । वह सुमंत से ज्यादा प्रभावित होती है । किंतु चित्रा का कैरेक्टर खराब नहीं होता, वह अपने पति को ही चाहती है । चित्रा जब दिल्ली में रहती है तब वह विचार करती है कि वह नरेश की कुछ मदद करे । इसलिए वह सुमंत के बताने के मुताबिक प्रूफ रीडिंग का काम घर में करने लगती है । यह काम सुमंत के प्रेस के होने की वजह से वह सुमंत के साथ बैठकर पूछ - ताछ करती है । किंतु इस काम में वह इतनी मशगुल हो जाती है कि वह नरेश का ख्याल नहीं रख सकती । इसी कारण दोनों के प्यार में बिखराव पैदा हो जाता है । और दोनों के बीच एक तीसरे आदमी की छाया खड़ी हो जाती है । सुमन्त चित्रा की नौकरी लगवा देता है तब नरेश को और भी गुस्सा आता है । नरेश अपना तबादला पटना करवा लेता है । नरेश ने चित्रा को जब साथ में चलने को कहा तब चित्रा ने मना कर दिया । चित्रा अपनी नौकरी छोड़कर जाने को तैयार नहीं थी । चित्रा को एक लड़का था उसके बाद जब लड़की हुई तब सुमंत ने पत्र लिखकर नरेश को बुलवाया । नरेश के आने पर चित्रा को कोई खुशी नहीं हुई । चित्रा ने तब भी नरेश के साथ जाना जरूरी नहीं समझा । चित्रा को यही बात खलती थी कि नरेश ने उसे गलत क्यों समझा । किंतु चित्रा साफ - साफ नरेश से भी बात नहीं कर सकती थी। दोनों एक - दूसरे से खुल के बात नहीं कर सकते थे । चित्रा एक समझदार स्त्री होने पर भी वह पति के साथ जीवन निभा नहीं सकी । चित्रा के पास जब भी नरेश आता तो वह सकुची ही सी बैठी रहती । चित्रा नरेश से खुलकर प्यार भी नहीं कर पाती । जब दोनों दिल्ली में पहली बार घुमने गये तब पुलिस को देखकर नरेश का साथ छोड़ देती है । तब नरेश का गुस्सा होना चित्रा को पसंद नहीं आता । और चित्रा नरेश से बात नहीं करती । चित्रा को यह बात पता है कि सुमंत का साथ रहना नरेश को पसंद नहीं है पर वह कुछ कर नहीं सकती । सुमंत का बाहर जाने का रुक जाना और नरेश का लौटकर आना और सुमंत को घर में मौजूद देखना

और नरेश का गुस्सा आना देखकर चित्रा घबरा जाती है और वह अपनी सफाई पेश करती है कि — "वे बाहर सोते थे और मैं अंदर सोती थी ।" यह सुनकर नरेश को बहुत गुस्सा आता है । किंतु चित्रा अपने रसोई घर में लीन हो जाती है । चित्रा के जीवन में अजीब सी घटनाएँ घटीत होती रहती है, फिर भी वह हिम्मत नहीं हार पाती । वह मक्कम रहती है ।

नरेश का चित्रा के मुंह को हाथ लगाना उसे पसंद नहीं वह गुस्से होकर अपने बच्चों को लेकर रसोई घर में काम में लग जाती है । और आखिर में भी वह नरेश के साथ नहीं जाती । वह अकेली ही अपने जीवन से लड़ती रहती है ।

§3§ सुमंत :- पूरी कहानी का दारो मदार इस सुमंत नामक पात्र में है । तीसरा आदमी कौन है ? वह यही सुमंत हैं । जो नरेश का रिश्ते में भाई लगता है । सुमंत नरेश की शादी में जाता है तब वह चित्रा को देखकर उसके पास बैठ जाता है और चित्रा बोर न हो इसलिए उससे बातें और मजाक करता है । सुमंत चित्राकेपढ़ी - लिखी होने पर चित्रा की कदर करता है । और दिल्ली में घूमने के लिए आने को कहता है । सुमंत दिल्ली में एक प्रेस में नौकरी करता है । सुमंत चित्रा को पत्र भी लिखता रहता है । चित्रा को भाभी - भाभी कहकर ही संबोधन करता है । नरेश का तबादला जब दिल्ली हो जाता है तब वह सुमंत के कमरे में ही रहता है । बाद में चित्रा भी आ जाती है । सुमंत का इतनी राहत हो जाती है कि अब खाना तैयार मिलता है । सुमंत कोई भी पिक्चर देखकर आता तो वह चित्रा को सुनाता और काम में उसका हाथ भी बटाता । सुमंत चित्रा का समय नहीं कटता इसलिए चित्रा को प्रूफ रीडींग का काम भी सीखा देता है और उसकी नौकरी भी लगवा देता है । सुमंत नरेश को गुस्से होते देख वह नीचे चला जाता है । सुमंत को जब पता चलता है कि नरेश और चित्रा के बीच अलगाव होने के कारण वह आत्महत्या कर लेता है ।

इस प्रकार सुमंत की मृत्यु हो जाती है और चित्रा अकेली रह जाती है ।

§6§ <u>समुद्र में खोया हुआ आदमी</u> :-

इस उपन्यास में पात्र श्यामलाल, रम्मी, बिरेन, तारा, हरबंस और समीरा है ।

§1§ श्यामलाल :- इस उपन्यास में मुख्य पात्र श्यामलाल है । श्यामलाल के परिवार में श्यामलाल ही घर का गुजारा चलाते थे । श्यामलाल सिन्धी ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ब्रांच में बुकिंग क्लर्क होकर काम करते थे । एक दिन अचानक रोड पर से सामान की चोरी हो जाने पर श्यामलाल को बर्खास्त कर दिए गए । जो हर्जाना था वह भरना पड़ा और महीने की तनख्वाह भी मारी गई । श्यामलाल एकदम टूट गया । उसी दिन से हरबंस का आना - जाना शुरू हुआ और तारा को उसकी दूकान में नौकरी लगवा दी । श्यामलाल को तारा का हरबंस का ज्यादा मिलना - जुलना पसंद नहीं आता था । श्यामलाल का बेटा जो बिरेन था उसे नौकरी मिलने के बाद श्यामलाल का परिवार राहत महसूस करने लगे । अचानक बिरेन की मृत्यु हो जाने पर श्यामलाल और रम्मी पूरी तरह टूट गये थे । श्यामलाल को अब घर की परेशानी बढ़ गई थी । श्यामलाल के सामने अँधेरा छा गया था । श्यामलाल और रम्मी बिरेन को मरा हुआ घोषित नहीं करना चाहते थे । उन लोगों को ऐसा ही था कि बिरेन जिन्दा है । श्यामलाल जब तक घोषित नहीं करेंगे कि बिरेन मर चुका तब तक सरकार उन लोगों को रुपये नहीं मिल सकते ।

श्यामलाल पुराने खयालात के होने पर उनकी लड़कियों का हरबंस के साथ बाहर जाना पसंद नहीं था । किंतु आखिर में तारा और हरबंस ही काम में आते हैं । श्यामलाल एक ऐसे चक्रव्यूह में फँस गए की कुछ उनसे सहा नहीं जाता । बिरेन की मृत्यु के बाद श्यामलाल की हालत बहुत ही खराब हो गई थी । श्यामलाल के पास किराया चुकाने के लिए पैसा भी नहीं था इसलिए उन्होंने एक कमरा खाली कर दिया । श्यामलाल ने जगह - जगह से कर्जा ले रखा था और वे लोग आकर उन्हें बेइज्जत कर जाते थे । श्यामलाल एकाएक बूढ़े लगने लगे थे । मकानमालिक, पड़ोसी, हलवाई सब लोग उन्हें घर से निकालने के चक्कर में थे । श्यामलाल को किसी की पहचान से नज़फगढ़ रोड की एक फैक्टरी में दरबान की नौकरी मिल गई । जिसने नौकरी दिलवाई थी उसने पचहत्तर रुपये में से पन्द्रह रुपये महावर अपने लिए तय कर लिए थे । इसी शर्त पर इतने बूढ़े और कमजोर आदमी" को नौकरी मिली थी । रेलगाड़ी की पटरी के पर जब भी कोई लाश बरामद होती तब श्यामलाल को बहुत घबराहट होती थी । " लगभग रोज - रोज़ हत्या या दुर्घटना देखते - देखते उनके दिल में अजीब-सा विराग पैदा हो गया था । मौत के प्रति जो दहशत थी, वह खो गई थी ।"§1§

---

1. कमलेश्वर - "समुद्र में खोया हुआ आदमी" पृ0 74

श्यामलाल को समीरा की चिन्ता हो रही थी वे सोच रहे थे कि अगर समीरा किसी किनारे लग जाए तो वह मुक्त हो जाएं । श्यामलाल ने हरबंस से कहा कि बिरेन की मृत्यु हो जाने पर मुआवजा घरवालों को मिले इसकी छान - बीन करो ।
श्यामलाल का खयाल था कि अगर कुछ पैसे मिल जाय तो गाड़ी पाटे पर आ सकती है ।

समीरा नर्स की ट्रनींग के लिए होस्टेल में रहने चली गई । श्यामलाल कभी - कभी उसे मिलने चले जाते और अपनी कमजोर आँखों के बारे में बात करते । श्यामलाल रम्मी से भी मिलने जाया करते थे । श्यामलाल जब भी परिवार के बारे में विचार करते तब उनकी आँखों में पानी भर आता । विरन के मरने के बाद मुआवजा लेने के लिए वे घर नहीं जाया करते थे क्योंकि मनिआर्डर रम्मी के नाम से आया करता था ।
श्यामलाल सब कुछ देखकर भी बोल नहीं सकता उसकी दशा त्रीशंकु की तरह थी ।

(2) रम्मी :- रम्मी श्यामलाल की पत्नी थी । रम्मी श्यामलाल से ज्यादा होशियार सहनशील थी । तारा ने दूकान में नौकरी कर ली तो शाम को देर हो जाये तब श्यामलाल तारा पर गुस्सा करते और कहते --
" तो छोड़ दो काम । हमें नहीं जरूरत है । मैं मर नहीं गया हूँ, आखिर सबको पालता ही रहा हूँ । बीरन को इस लायक कोई बाहर वाला नहीं कर गया था।समझी।

" पर इतने से चलेगा कैसे ?" तारा ने कहा ।

" यह मेरे सोचने की बात है । तुमसे जो कहता हूँ वह करो । "

" तो सोच - समझकर तय किया करो कोई बात, " रम्मी बीच में आ पड़ी थी, " कल मनीआर्डर आया है न इसलिए उछल रहे हो । आठ दिन बाद घर का खर्चा कहाँ से चलेगा ? समीरा की फीस कहाँ से आएगी ..... "
श्यामलाल ने कहा -- " मैं करूँगा इन्तजाम । "
रम्मी ने कहा " जिस दिन इन्तजाम करके एक महीने की पेशगी मेरी हथेली पर धर दोगे, उसी दिन से यह बाहर नहीं जाएगी, " रम्मी ने गुस्से से कहा, " बगैर सोचे - समझे हुकुम चलाते रहते हो । तुम्हें क्या, तकलीफ तो हमें उठानी पड़ती है । तारा चार पैसे नहीं लाएगी तो हो लिया .... "(1)

रम्मी श्यामलाल की कोई भी बात होती तो वह चतुराई से बात टाल देती हैं।

---

1. कमलेश्वर - "समुद्र में खोया हुआ आदमी" - पृ0 16

रम्मी अपने बच्चों की देख भाल भी अच्छी तरह करती थी । फैसले घर के खुद ही करती थी । रम्मी एक समझदार और सहनशील नारी है । उसे पता है कि घर कैसे चलाना है । श्यामलाल जो चीज से प्यार नहीं करते वही चीज से रम्मी प्यार करती है यानी चतुराई से अपने घर का गुजरान चलाते हैं । जैसे कि – हरबंस से श्यामलाल को बहुत चिढ़ थी और वह जब घर में आता तब उसे बहुत गुस्सा आता थी । यह बात रम्मी अच्छी तरह जानती थी । फिर भी रम्मी हरबंस को घर में मान से बुलाती और बैठाती और उसके लिए चाय बनाती और उसे देती । रम्मी हरबंस के कहने पर ही चलती थी । उसकी बात मानती थी । रम्मी को सिर्फ शॉक तब लगता है जब बीरन की मृत्यु हो जाती है । वह बीरन को मरा हुआ घोषित नहीं करना चाहती । उसे ऐसा ही लगता है की बीरन एक दिन जरूर वापस आयेगा । और वह हमेशा पागलों की तरह घर में बैठी रोती रहती है । और वह मन से डट जाती है । जिस दिन बीरन के मरने के बाद जो पैसा मिलना चाहिए उसके लिए वह पुलिस चौकी, कचहरी में जाती है ।

श्यामलाल जीवन में रम्मी को सुख नहीं दे पाये । रम्मी का पूरा जीवन संघर्षमय व्यतित हुआ । आखिर में रम्मी को अपनी बेटी तारा के घर रहना पड़ता है । उसमें तारा का भी स्वार्थ है और रम्मी का भी । श्यामलाल कभी – कभी रम्मी को मिलने आते तब उसे बहुत अच्छा लगता । बीरन के जो रम्मी के नाम मनीआर्डर आते थे उसी से रम्मी पैसों के लिए दावा कर रही थी ।

" रम्मी के हाथ में हमेशा एक बस्ता रहता । उस बस्ते में बीरन के खेत, मनीआर्डर रसीदें, ट्रस्ट द्वारा समीरा के लिए रुपये दिए जानेवाले कागज और अर्जियों की प्रतिलिपियाँ – वगैरह भरी रहती, वह हरबंस के कहने के मुताबिक जहाँ – जहाँ जरूरत पड़ती, धरना सा देने लगी थी ।

कमिश्नर साहब की कोठी पर तो वह हर सुबह दिखाई देती । मुलाकात हो या न हो, पर वह मौजूद रहती । नार्थ और साउथ एवेन्यू में वह बक्त जरूरत चक्कर काटती रहती । "(1)

रम्मी को बाहर का हाल – चाल देखकर बड़ा साहस मिला था । रम्मी देखने में इतनी बेचारी नहीं थी, जितनी कि वह खुद बनी हुई थी या उसे बना दी गयी थी । रम्मी परिवर्तन के अनुसार रहती थी । अगर वह पहले से ही बाहर कदम

---

1. कमलेश्वर – "समुद्र में खोया हुआ आदमी" – पृ0 91–92

रखती तो शायद इतनी जिल्लत, की ज़िन्दगी उसे न जीनी पड़ती, जो उसने पिछले दिनों जी थी । रम्मी जरूरत पड़ने पर श्यामलाल को ख़ुद ही फैक्टरी तक जाकर उनसे मिल लेती थी और हाल - चाल पूछ आती थी । रम्मी बाहर के भाग-दौड़ में इतनी तेज हो गई कि अब उसे किसी बात का डर नहीं लगता था वह हरबंस से कहती है कि --

" तुमने किसी और रम्मी के जरिये सुरक्षामन्त्री से बात करने को कहा था ... तुम कहो तो मैं मिल आऊँ ?" रम्मी ने पूछा । "§1§

तारा के दुबारा जब पाँव भारी हुए तब रम्मी को ही सारे घर का काम संभालने पड़ता था । और मुन्नी की देखभाल भी करनी होती थी ।

रम्मी के हाथ में जब पाँच महीने के तनखवाह का चालान और बीरन का सामान लेकर घर आये तब बक्सा खोलकर एक - एक चीज देखकर सब बहुत रोए । "रम्मी बिलख-बिलखकर रो पड़ी थी -- "हाय मेरे बीरन ... तू कहाँ खो गया मेरे बेटे .... ।"§2§

रम्मी ने समुद्र की ओर देखा और सोच में पड़ गये .... " हहराता हुआ समुद्र जिसका कोई और छोर नहीं था । जिसमें खोए हुए आदमी के बारे में कोई नहीं बता सकता था । और उसी समुद्र में वह डूबती चली गई ..... चारों तरफ पानी था .... उसके कानों में, आँखों में, पेट में खारा पानी भर गया था और साँस उबने लगी थी । उबती साँस से एक दम आँख खुली तो चारों तरफ धुप अँधेरा था । चारों तरफ समुद्र की मनहूस खामोशी छाई हुई थी । .... "क्यों समीरा.... वे मल्लाह कितने बरस में लौटे थे ।"§3§ पर समीरा वहाँ नहीं थी वह एकदम ख्यालों में डूब गयी थी ।

इस प्रकार रम्मी हर समय सोच में रहती और बीरन को याद करती रहती ।

§3§ हरबंस :- हरबंस की छोटी सी दुकान थी, जहाँ वह गिलाफों, चादरों, पेटीकोट, ब्लाउजों और साड़ियों वगैरह पर फूल - पत्तियाँ ट्रेस करके देते थे । श्यामलाल पर जब कोई काम नहीं रहा तब हरबंस ने श्यामलाल को घर - घर जाकर आर्डर बुक कराने का काम दे दिया था । श्यामलाल आर्डर ले आते तब हरबंस अपनी साइकिल से बेलबूटों के नमूने लेकर एक - एक घर पहुँचता और बहनो - बहुओं के गिलाफों पर "मधुर स्वप्न", "गुडलक" या रूमालों पर गुलाब का बुटा या पेटीकोटों पर फलदार सुराहियों के डिजाइन ट्रेस कर आता । कमीशन श्यामलाल को भी देता । हरबंस ने धीरे - धीरे

---

1. कमलेश्वर - "समुद्र में खोया हुआ आदमी" - पृ0 96
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 102
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 103

अपना काम जमा लिया तब एक घड़ी वाले की आधी दुकान में उसने अपना "पैटर्न हाउस" खोल दिया। हरबंस पहले आदमी थे जो श्यामलाल के घर आना - जाना शुरू हुआ । हरबंस शाम को घर आते तब तारा और समीरा से बेलबुटे के नमुने माँगते थे । श्यामलाल को यह सब अच्छा नहीं लगता था । हरबंस बहुत चालाक था उसने घर का तनाव हल्के से भाँप लिया तो वह बोला -- "बाबू जी .... आप हमारे बिज़नेस में हिस्सेदार हो जाओ । लगाने के लिए कोई खास रकम नहीं चाहिए । घड़ी वाले को तीन हजार देना है, उसका आप इन्तजाम कर लीजिए । हमारी आपकी हिस्सेदारी हो गई । "(1) हरबंस ने आखिर में कहा आधा मुनाफा आपका । इस प्रकार की बात करके वे श्यामलाल को खुश कर देते थे । श्यामलाल के पास तीन हजार रूपयों की भी दिक्कत थी तब श्यामलाल ने कहा -- "वो तो ठीक है पर ...." श्यामलाल इतना कहके रूक गए । हरबंस उनको दिक्कत समझता था । उसने बहुत सँभालकर कहा - "ठीक समझीए तो तारा को बूटे उतारने के लिए हमारे यहाँ रख दीजिए । हाई क्लास औरतें आती हैं, उनसे तारा बात भी कर सकेगी .... और जब आप रूपया दे सकें, तब हिस्सेदार बन जाएँ । मुझे भी एक हाथ की जरूरत है ...।"(2) हरबंस रोज दुकान बंद करके तारा को घर पहूंचाने आता था । इस प्रकार हरबंस ने रम्मी से अच्छे संबंध बांध लिये थे । धीरे - धीरे हरबंस का तारा के साथ संबंध बढ़ जाता है और वे दोनों एक दूसरे को प्यार करने लगते हैं । किन्तु श्यामलाल को यह सब पसंद नहीं था इसलिए वे चिढ़ते थे । किन्तु रम्मी बहुत समझदार थी वे श्यामलाल को समझा लेती थी । हरबंस तारा से शादी कर लेता है । किन्तु अचानक बीरन की मृत्यु होने पर श्यामलाल के परिवार का भार हरबंस को संभालना पड़ा । हरबंस बहुत चालाक था । जब तारा के दुबारा पाँव भारी हो गये तब हरबंस ने रम्मी को अपने साथ रख लिया और सारे घर की देखभाल रम्मी के सर आ पड़ी । हरबंसनेबीरन के मृत्यु पश्चात श्यामलाल को सरकारी दफ्तर से दौड़ भाग करके रूपये भी दिलवाये ।

इस प्रकार हरबंस हरेक कार्य में निपुण रहे हैं ।

तारा :- "तारा" श्यामलाल की बड़ी बेटी है । उस पर परिवार की जिम्मेदारी थी । श्यामलाल का व्योपार न चलने पर तारा को घर चलाने के लिए हरबंस की दूकान पर 40 रूपये में नौकरी करनी पड़ी । तारा घर के बारे में ज्यादा विचार

---

1. कमलेश्वर - "समुद्र में खोया हुआ आदमी " पृ० - 5

2. पूर्वोक्त - पृ० 5

करती थी । उसने हरबंस के साथ शादी करने पर भी घर के फैसले खुद ही करती थी । तारा ने बीरन की मृत्यु को स्वीकार करने के लिए श्यामलाल व उनकी पत्नी को तैयार कर लिया । तारा अपनी माँ को अपने घर ले गई । तारा की एक बेटी थी उसे उसकी माँ संभालती थी ।

तारा एक साहसिक और सहनशील नारी है । तारा जब दुबारा गर्भवती रहती है तब वह अपने पड़ोसी के घर जाकर उसकी सहायता लेती है यानी तारा आधुनिक विचार के साथ चलना पसंद करती है । तारा अपनी छोटी बहन को होस्टेल में रखकर नर्स का कोर्स करवाने का फैसला करती है । और उसे होस्टेल में एडमिशन के लिए कोशिश करती है ।

§7§ <u>लौटे हुए मुसाफिर :</u>

इस बस्ती में जीने वाले प्रत्येक पात्र का अपना महत्व है । सत्तार, साई हमारे मन पर अधिक छा जाते हैं । अपनी ममतामयी दृष्टि के कारण, विशाल मातृ-हृदय के कारण नसीबन, भावुक तथा साम्प्रदायिक बहकावे में आकर बस्ती को खाक करने वाले साई - पाठकों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेते हैं ।

§1§ <u>नसीबन :</u>

नसीबन सम्पूर्ण उपन्यास पर छा गई हैं । आज सन् 1960-61 में बूढ़ी नसीबन उदास निगाहों से बस्ती की ओर देख रही है । स्वतन्त्रता के इन 14-15 वर्षों बाद इस बस्ती में काफी नये परिवर्तन हुए हैं । नयी जिन्दगी यहाँ आ रही है । परन्तु नसीबन को इस नयी जिन्दगी के प्रति कोई उत्साह नहीं । क्योंकि यहां अपना कोई नहीं है । सब चले गये । नफरत की आग ने सब को झुलसा दिया । 1925-30 के समय यह बस्ती बड़ी खूबसूरत थी ।"लेकिन जब तक अपने कहे जाने वाले अपने पास न हों, नई जिन्दगी भी बहुत पुरानी और बोझिल लगती है । वही बोझ-सा था नसीबन के दिल पर ।"§1§ इस नसीबन की स्मृतियों के माध्यम से बस्ती के पूरे भूतकाल को जीवन्त कर दिया गया है । "नसीबन" इस बस्ती की सब से स्पष्टवादी तथा निर्भय स्त्री है । उसने जिन्दगी के उतार - चढ़ाव देखे हैं । उसकी आँखें आदमी को झट से पहचानती हैं । इसी कारण सत्तार जब पहली बार इस बस्ती में आया और साई ने परिचय करवाया तो - "नसीबन ने गहरी नजरों से सत्तार की ओर देखा था, जैसे वह सब जानती हो कि यहाँ आकर यह कौन सा काम शुरू कर सकता है ।"§2§

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर"- कमलेश्वर - पृ0-7 §2§ पूर्वोक्त - पृ0 10

किसी दूसरे की व्यक्तिगत जिन्दगी में दखल देना नसीबन को जरा भी पसन्द नहीं । साईं के ठीक उलटा उसका यह स्वभाव है । वह तो सब को अपनी सहानुभूति और स्नेह देती रहती है । सलमा और सत्तार के सम्बन्ध को लेकर साईं जब उन्हें खूब डाँटता है, तब नसीबन को यह सब ठीक नहीं लगता । उसके अनुसार - " इस सब से क्या फायदा हुआ साईं ?.... सारी दुनिया की जिम्मेदारी क्यों ओढ़ ली है तुमने, साईं ? जिसके जो मन में आता है, करने दो, तुम टांग क्यों अड़ाते हो ?"(1) नसीबन सत्तार के प्रति सहज स्नेह के कारण इस बात से घबरा जाती है । -- "सत्तार इतना ही समझ गया है कि .... " यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना मुझे पता है कि अंग्रेज हमारे दुश्मन है .... हिन्दोस्तान के दुश्मन हैं ....और इन्हें मार भगाना हमारा फर्ज है ।"(2) उस अशिक्षित स्त्री को लगता है कि अंग्रेज तो सर्वाधिक शक्तिशाली हैं, अकेला सत्तार उन्हें कैसे मार सकेगा ? इसलिए वह कहती है -- "सुन इ.... मेरे पास एक असली लोहे की गुप्ती है ..... तू इधर आ तो, मैं तुझे दे दूं.... किसी से कहियो मत, समझा ।"(3) स्पष्ट है कि नसीबन अंग्रेजों को मारने के लिए गुप्ती दे रही है । परन्तु इस गुप्ती देने के मूल में अंग्रेजों के प्रति चिढ़ नहीं, सत्तार के प्रति सहज वात्सल्य से निर्मित चिन्ता ही है ।

नसीबन और बच्चन को लेकर इस बस्ती में तरह - तरह की अफवाहें है । इन अफवाहों को फैलाने का कार्य साईं, मकसूद और यासीन ने ही किया है । बस्ती के एक हिन्दू परिवार " बच्चन" के यहाँ नसीबन अक्सर जाती है । बच्चन की पत्नी मर चुकी है और उसके दो छोटे - छोटे बच्चे हैं । ये दोनों बच्चे नसीबन के बच्चों के दोस्त हैं, साथी हैं । विशाल - हृदया नसीबन इन बच्चों की अनाथावस्था देख नहीं पाती इसीलिए वह इन्हें माँ का प्यार देती है । लोग इसी सहायता का मतलब निकालते हैं कि नसीबन और बच्चन दोनों में गलत सम्बन्ध हैं । साईं, मकसूद और यासीन निपराध बच्चन को एक चोरी के कांड में फंसा देते हैं और बच्चन जब मारा - मारा फिरने लगता है, तब नसीबन ही उसके बच्चों की देखभाल करती है ।" पता नहीं कैसा बाप है, जो अपने बच्चों तक का ख्याल नहीं रखता । इतनी रात उतर आई, घर में बच्चे अकेले पड़े होगें - भूखे - प्यासे और यह पट्ठा घूम रहा है । अजीब आदमी है .....बड़बड़ाती हुई नसीबन बाहर निकल गई । सत्तार ने देखा, उसकी

1. "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ0 14
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 25
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 26

रोटियों की पोटली थी और गिलास में सालन ।"{1} इस उदाहरण से स्पष्ट है कि नसीबन का मातृहृदय सम्प्रदाय और धर्म को भी लाँघ गया है । निस्वार्थ भाव से वह बच्चन के बच्चों की देखभाल करती है । इतना ही नहीं, उसे हर बार आने वाले खतरे से आगाह कर देती है । जब बच्चन के आने की संभावना नहीं दिखती, तो उन बच्चों को सीधे अपने घर ले आती है, यह कहते हुए -- "जो होगा सो देखा जाएगा ।"{2} नसीबन के मन में बच्चन के प्रति और न बच्चन के मन में नसीबन के प्रति इस प्रकार के भाव थे ।

लोग नसीबन को कहते हैं कि क्या कहें इस नसीबन को ? जो बच्चन उसकी बदनामी कर रहा है, उसे ही वह रूपये दे रही है, जो उसने पेट काट - काटकर जमा किए थे । "नसीबन" इसी कारण तो बहुत ही ऊँची उठ जाती है । इस सामान्य चरित्र के भीतर की यही असामान्यता के कारण "सत्तार कुछ कह नहीं पाया था, कुछ भी कहते हुए जैसे वह अपनी नजरों में अब बहुत छोटा हुआ जा रहा था ।"{3}

अन्य पात्रों की तुलना में नसीबन निर्भीक है तथा स्पष्टवादी । इन्हीं गुणों के कारण वह साँई को कई बार झिड़कती है । उसकी इस निर्भीकता का सब से बड़ा प्रमाण संघी लोगों के साथ उसके व्यवहार में मिलता है । संघियों के प्रति मुस्लिमों के मन में "डर" की भावना है ही परन्तु नसीबन इनको निरूत्तर कर देती है । संघी लोग जब उस पर यह आरोप लगा देते हैं कि " हमें पता चला है कि आप दो अनाथ हिन्दू बच्चों का धर्म परिवर्तन करने वाली है ।..... यह हो नहीं सकता ।"{4} तब नसीबन इतना ही कह पाती है । "क्या .... धरम" .... उसे और अधिक परेशान करने के बाद वह कह देती है -- " बच्चे किसी अनाथालय में नहीं जाएँगे । हम यह झंझट जानते नहीं ... रही उनके मुसलमान होने की बात, सो सोलह आने गलत है ।"{5}

विभाजन के बाद धीरे - धीरे लोग पाकिस्तान की ओर निकल पड़े । परन्तु नसीबन इस बस्ती को छोड़कर जाना नहीं चाह रही थी । उसे इस बस्ती से अत्यधिक प्यार था, तथा यूं अपनी मिट्टी को छोड़कर जाने की बात उसे बड़ी अजीब सी लगती है । और इसी कारण बस्ती उजड़ जाने के बाद भी वह वहीं रहती है ।

---

1. लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ0 65
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 92 , 3. पूर्वोक्त - पृ0 -92
4. पूर्वोक्त - पृ0 - 92, 5. पूर्वोक्त - पृ0 92 92

आज इस घटना को हुए 15 -- 15 वर्ष बीत गए । परन्तु आज भी नसीबन को लगता है कि सब लोग कल तक तो यहीं पर थे । यह सब क्या हुआ है ? यह बस्ती यूं उजड़ क्यों गई है ? आज जब कभी " नसीबन का मन डूबता, वह उधर ही ताकने लगती और उसे वे दिन याद आते जब वह बस्ती के बच्चों को खोजती हुई वहां जाया करती थी .... "(1) नसीबन शायद किसी अनागत की प्रतीक्षा में है । इसलिए वह उन रास्तों की ओर ही देखते रहती है, जो बस्ती की ओर आते हैं । एक दिन उसकी यह प्रतीक्षा समाप्त हो जाती है । क्योंकि वह अनुभव करती है कि सात - आठ नौजवान इसी बस्ती की ओर आ रहे हैं ।" और मिनट भर में सारी पहचानें उभर आयी थीं ..... उन्हीं गए हुए और बिखर गए घरानों के बच्चे अब मजदूरी करने के लिए फिर लौटे थे .... और अपने पुराने घरों की जगह खोज रहे थे ... चलते वक्त उनके अब्बा या घरवालों ने बताया था -- "उधर ... अपने घर हैं।"(2) इनके आ जाने से "नसीबन खुशी से रो पड़ी थी । .... और उन्हें अपने साथ ले गई थी .... उन निशानों के पास जो अब भी बाकी थे .... "(3)

नसीबन के इस चरित्र के विकासात्मक अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष दिए जा सकते हैं :-

नसीबन का मन " अपरिवर्तनशील " है । अर्थात् अन्य पात्रों में जिस प्रकार नफरत की चिनगारी फैलती जाती है और उनमें जो भयानक परिवर्तन दिखाई देता है, उसका यहाँ पूर्णतः अभाव है । सहज मातृ-हृदय को लेकर वह जीती रही । इस मातृ-हृदय पर बाहरी बातों का, अफवाहें निन्दा अथवा बदनामी का कोई असर नहीं हुआ । बच्चों के प्रति उसकी आँखों में असीम ममता थी ।

प्रवाह के साथ वह बहती नहीं, अपितु "स्थिर" रहकर दूसरों को सहारा पहुंचाती है । वास्तव में इस जलती हुई बस्ती में वह "ओएसिस" की तरह है । अपनी मिट्टी से उसे बेहद प्यार है । इसी कारण वह यह नहीं समझ पाती कि लोग अपनी बस्ती को छोड़कर हमेशा के लिए दूर कैसे जा सकते हैं । नसीबन अशिक्षित होते हुए भी वह व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अन्तर मानती है ।

नसीबन अत्यधिक स्वाभिमानी है । किसी के अपमान अथवा गलत व्यवहार को वह सहन नहीं कर पाती । बच्चन के स्वभाव को समझ जाने के बाद तो उसे उसका तिरस्कार करना चाहिए था, पर वह नहीं कर सकी । तिरस्कार और नफरत ये उसके

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर " - कमलेश्वर - पृ0 61
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 116 3. पूर्वोक्त - पृ0 116

स्वभाव में है ही नहीं । उसका तो लक्ष्य है — कर्तव्य करते जाना । लोग क्या कहते हैं या कहेंगे, पर विचार करने वह कभी नहीं बैठती । यह नसीबन की त्रासदी है कि उसकी मनःस्थिति को समझने वाला कोई नहीं था -- सिवा सत्तार के । उसके पास अपने लिए केवल गहरा सन्नाटा है । उसके बारे में इतना ही कहना होगा-

" She is just a silent flame of love "

" प्यार और स्नेह की शांत ज्योति की तरह उसका व्यक्तित्व है । स्नेह की वह ममतामयी मूर्ति है ।

नसीबन जिस मार्ग पर ले जा रही थी वही मार्ग श्रेष्ठ, व्यवहारिक और विधायक था -- वह मानवतावादी भावना का श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का, करूणा, उदारता, सहजता, स्नेहशीलता, स्पष्टता, निर्भयता, धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक है ।

धर्म और सम्प्रदाय से भी ऊपर उठकर केवल मनुष्य मात्र को लेकर सोचने वाली यह अशिक्षित गँवार स्त्री हजारों पढ़े - लिखे परन्तु संकुचित और साम्प्रदायिक लोगों को पराजित कर देती है, अपने इन्हीं मानवीय गुणों के कारण ।

§2§ <u>साई</u> :

एक और नसीबन प्रवाह - पतित न होते हुए अपने व्यक्तित्व तथा मानवीय भावों की गरिमा अन्त तक बनाए रखती है तो दूसरी ओर सांई प्रवाह के साथ बह जाता है । "नफरत" की चिनगारी उसके भीतर प्रज्वलित हो उठती है और इसीलिए वह उस चिनगारी को और अधिक लोगों में फैलाने लगता है । साई फकीर है । ऐसे फकीर भारत के किसी भी बस्ती में पाए जाते हैं । नफरत की यह चिनगारी साई के भीतर प्रचलित होने के पूर्व साई आम भारतीयों की तरह सबके साथ मिल जुलकर रहा करता था । "जुम्मन साईं की कोठरी के सामने धूनी रमी रहती थी .... इक्के और तांगे वाले, स्टेशन के कुली और छोटे दूकानदार वहाँ शाम को इक्कट्ठे होते और गप्पें लड़ाते ।"§1§ जुम्मन साईं की चिकवों की इस बस्ती में काफी इज्जत थी । साईं ही इस बस्ती के सभी झगड़ों का निपटारा किया करता था । साईं जैसे बाहर से दिखता है, वैसे भीतर से नहीं । "यूँ तो साईं दुनिया की बातों से बहुत दूर होने का नाटक करता था, पर भीतर - ही - भीतर वह उसी में रमा रखता था ।" इसी कारण वह सलमा और सत्तार के व्यक्तिगत जीवन में झाँकता है । साईं खुद

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर -पृ0 - 9

को इस बस्ती के मुसलमानों का प्रमुख मानता है । इसी कारण वह प्रत्येक के व्यक्तिगत जीवन की पूछताछ करते रहता है । यह साईं के व्यक्तित्व की कमजोरी ही है । इसी कारण नसीबन द्वारा बार - बार डाँटने पर भी वह दूसरों की जिन्दगी में टांग अड़ाते रहता है । वह लोगों को यह बतलाता है कि सारी दुनियां की जिम्मेदारी उसने ओढ़ ली ।

अलीगढ़ का सियासी कारकून यासीन और सलमा का पति मकसूद के कारण साईं "साम्प्रदायिकता" के जहर को फैलाने लगता है । इन लोगों के आने से पहले .. "रोजना यह सब देखते हुए साईं निकल जाता था । .... सब जैसे के तैसे रहते आ रहे थे और अपने कटोरों में पैसे खटका हुआ और तूंबी लिए हुए जब वह लौटता, तो जैसे शहर - भर का दर्द बटोर लाता ।"﴾1﴿ तब जुम्मन साईं की बैठक में मुसलमान तांगे वाले और हिन्दू कुली समान रूप से आकर बैठते थे । ... "इक्के वाले ज्यादातर मुसलमान थे और कुली हिन्दू, पर उनमें कहीं भी फर्क नहीं था । सब पर जमाने की मार थी और सब के नासूर एक से रिस रहे थे और सब के मसले समान थे । उन्हें धर्म - चर्चाओं से मतलब नहीं था, पर इससे मतलब जरूर था कि धर्म उन जैसे बदनसीबों के लिए क्या कहता है ? "﴾2﴿ परन्तु यासीन और मकसूद के आने के बाद हिन्दू और मुसलमानों के मसले बदल दिए जाते हैं । यासीन उन्हें बतलाता है कि हिन्दू, हिन्दू है और मुसलमान, मुसलमान । परिणामतः साईं भी इसी दृष्टि से सोचने लगता है और अब उसकी बैठकें मस्जिदों में, और वह भी केवल मुस्लिमों की ही होने लगती हैं और साईं कहने लगता है, -- " कानगरेस तो हिन्दुओं की जमात है ।"﴾3﴿ अथवा -- " हिन्दू नेता यह चाहते हैं कि वे मुसलमानों को अँगूठा दिखा देंगे, यही उनकी चाल है ।"﴾4﴿ साईं के इन वक्तव्यों से स्पष्ट है कि वह प्रवाह - पतित हो रहा है । "धर्म" के असली स्वरूप को जानते हुए भी वह अनजान बन रहा है । यासीन और मकसूद के कारण वह साम्प्रदायिक आग भड़काने के लिए प्रयत्नशील है । बच्चन के बच्चे उसे "हिन्दू" लगते हैं, केवल बच्चे नहीं । अथवा बच्चन - नसीबन में वह गलत सम्बन्ध देखने लगता है । हर हिन्दू उसे अब मुस्लिम कौम के शत्रु लगने लगते हैं । इसी कारण वह लोगों को समझाने बैठता है -- " हम सिर्फ अपनी कौम पर भरोसा कर सकते हैं । हिन्दू और अंग्रेज दोनों दगा देंगे हमें । "﴾5﴿

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ0 17, 2. पूर्वोक्त - पृ0 18
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 27, 4. पूर्वोक्त - पृ0 - 28, 5. पूर्वोक्त - पृ0 - 58

सत्तार जब साईं, मकसूद और यासीन की नीतियों का विरोध करता है, तो साईं उस पर न केवल चिढ़ जाता है अपितु - "साईं ने उसी रात सत्तार को मस्जिद की कोठरी से निकलवा दिया था ।" आखिर सत्तार भी तो एक मुसलमान ही है । परन्तु साईं को ऐसे व्यक्तियों से चिढ़ - सी हो गई है । जो इस प्रकार साम्प्रदायिकता को उभरने नहीं दे रहे हैं, जो विभाजन के विरोध में हैं । पूरी बस्तीमेंसाईं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानने वाला एक ही व्यक्ति मौजूद है -- इफ्तिकार तांगे वाला । इसी कारण इफ्तिकार साईं की प्रत्येक नीति का विरोध करता है । सत्तार की विचार-धारा को भी वही सही दिशा देता है । इफ्तिकार एक स्थान पर साईं के सम्बन्ध में कहता है -- " यह साईं बड़ा घुटा हुआ आदमी है, सत्तार ! शहर भर में घूम - घूमकर यह करता क्या है ? जितने बुरे फेलवाले लोग हैं, सबसे दोस्ती इसकी । इससे अल्लाह का क्या वास्ता ?" ‖1‖ स्पष्ट है कि उसकी "कथनी" और "करनी" में अन्तर है । इसको किसी षड्यन्त्र में फँसाना भी मुश्किल है । क्योंकि "पुलिसवालों से बड़ी घुटती है उसकी ।" पुलिसवालों के साथ इसी घनिष्ठता के कारण साईं निरपराध बच्चन को चोरी के मामले में फँसा देता है । उसके बच्चों को निराधार बनाता है । और बच्चन की सारी जानकारी सत्तार को है, इस सन्देह से सत्तार को भी पुलिस की ओर से पिटवाता है । साईं नसीबन के विशाल मातृ - हृदय को समझ नहीं सका है ।

पाकिस्तान के प्रति इतना आग्रह रखनेवाला, लोगों के दिलो - दिमाग पर "पाकिस्तान" इस नये राष्ट्र का नशा चढ़ानेवाला साईं खुद पाकिस्तान नहीं जाता । इस बस्ती के प्रति उसके मन में जो मोह है उस कारण वह नहीं गया अथवा कुछ अन्य कारण थे, नहीं मालूम । लगता ऐसा है कि बस्ती के मोह के कारण ही वह जा नहीं सका है । इस उजड़ी हुई बस्ती को देखकर साईं अक्सर निराश हो जाता है और -" अब साईं भी दुःखी था और किसी हद तक अपनी गलती मन - ही - मन स्वीकार कर चुका था ।"‖2‖ लेखक के इस अन्तिम वाक्य के इस अन्तिम वाक्य के कारण साईं के चरित्र पर दूसरे ढंग से विचार करना पड़ता है । पश्चाताप के इस वाक्य से ही स्पष्ट है कि साईं मूलतः बुरे स्वभाव का नहीं है । मनुष्य - मन की कमजोरियाँ उसमें हैं औरों के विचार - प्रवाह में वह जल्दी बह जाता है । उसके पास किसी निश्चित सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक दृष्टि का पूर्णतः अभाव है । दृष्टि के इसी अधूरेपन के कारण वह यासीन और मकसूद के विचारों से बहक जाता है । दूर - दृष्टि का अभाव रहने

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ० 58
2. पूर्वोक्त - पृ० - 111

के कारण ही वह इस नफरत की आग को फैलाते जाता है । धर्म और सम्प्रदाय से परे हटकर सहजता से जीने वाले लोगों के जीवन में ऐसे लोग व्यर्थ का तूफान निर्माण कर देते हैं ।

" किसी के व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश करना " - यह साईं की चरित्रगत कमजोरी है । स्वाभिमान भी इसमें नहीं है । इसी कारण सत्तार, सलमा और नसीबन द्वारा अपमानित होने के बाद भी वह उनके साथ बातें करता है । इस व्यवहार के मूल में "उदारता" नहीं "धूर्तता" है । अपने अपमान का बदला वह बहुत ही बुरे और विकृत पद्धति से लेना चाहता है । मानसिक दृढ़ता का भी उसमें अभाव है । पश्चाताप उसे तब होता है, जब बस्ती पूर्णतः खाक हो जाती है । असल में धोखा ऐसे ही लोगों से अधिक है, जो धर्म का चोला पहनकर धर्म के विरोध में कार्य करने लगते हैं ।

§3§ सत्तार :

सत्तार किसी दूसरे कस्बे से इस कस्बे में आया था । इसके पहले वह किसी सर्कस कम्पनी में घोड़ों की जीन कसा करता था । शहर में साईं से उसकी मुलाकात हुई थी । वहीं से साईं उसे इस बस्ती में ले आया था । शहर से इस बस्ती की ओर आते समय ही सत्तार के कानों में "पाकिस्तान" की भनक पड़ चुकी थी । इसीलिए वह साईं से कह रहा था -- "लगता है अब अपना पाकिस्तान बन जायेगा .... शायद एक बेहतर जिन्दगी मिले मुसलमानों को .. . यहाँ तो बड़ी गरीबी है, न करने को काम, न रहने को जगह ।"§1§ पाकिस्तान के प्रति सत्तार के मन में आरम्भ में इस प्रकार का आकर्षण था । परन्तु इस बस्ती में आने के बाद धीरे - धीरे उसका यह आकर्षण समाप्त हो जाता है । इफ्तिकार तांगेवाला और नसीबन के कारण भविष्य में बनने वाले इस "पाकिस्तान" के प्रति उसकी हमदर्दी खत्म हो जाती है और यासीन - मकसूद के कारण तो वह इस नये राष्ट्र का विरोध करने लगता है ।

" इस बस्ती की मस्जिद की बाहर वाली एक कोठरी में सत्तार को रहने की जगह मिल गई थी ।"§2§ नसीबन से उसका परिचय यहीं पर हुआ और सलमा से भी परिचय हो गया । सलमा का परिचय धीरे - धीरे प्यार में बदल गया । प्यार - जिसमें शारीरिक प्यास ही अधिक है । शहर से आए हुए इस युवक का बस्ती की किसी

---

1. "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ० - 9
2. पूर्वोक्त - पृ० - 10

विवाहित स्त्री से इश्क शुरू हो गया है - यह सुनकर साईं भड़क उठता है । इसी कारण उसकी "कोठरी पर पेशी भी हुई ।" इस पेशी के बाद सत्तार यह अनुभव करता है कि साम्प्रदायिकताकी आग इस बस्ती में फैलने लगी । यासीन और मकसूद इस आग को फैलाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं । सत्तार को ये साम्प्रदायिक बातें ठीक लगती थी । इसी कारण तो वह सोचता है कि "नसीबन को उसकी गुप्ती ही वापस कर आये, [illegible], क्योंकि अब वह हिन्दुओं के साथ मिलकर अंग्रेजों को मारने में मदद क्यों दे ।"{1} और फिर यह भी सोचता है कि - इस प्रकार हिन्दुओं से नफरत करके वह सलमा के पति और उसके दोस्त की बातों की इज्जत कर रहा है, उन्हीं के इशारे पर चल रहा है । इसीलिए फिर वह तय करता है कि --"वह ऐसा कोई भी काम हरगिज नहीं करेगा जिसमें मकसूद का हाथ हो ।"{2} सत्तार की द्वन्द्वात्मक स्थिति अन्त तक रहती है । साम्प्रदायिकता की ओर वह नहीं बढ़ सका, इसके पीछे यही मनोवैज्ञानिक कारण है । यासीन और मकसूद के स्थान पर कोई और होता तो सत्तार भी इस आग को और फैलाता । विभाजन और यासीन करेंगे वह मैं नहीं करूँगा । -- दरारें पड़ चुकी थी, इसीलिए उसे मकसूद से नफरत है और इसी कारण मकसूद के हर कार्य से । और एक दिन नसीबन द्वारा उसे मकसूद की कमजोरियों का भी पता चलता है । मकसूद की स्त्रैणता से उसे और भी चिढ़ आ जाती है । वह सोचता है कि सलमा को लेकर वह कहीं भाग जाएगा । " कहाँ " ? "पाकिस्तान" । परन्तु इस पाकिस्तान के प्रति उसकी यह विरक्ति और भी बढ़ जाती है । जब सलमा और उसे लोग उनकी इच्छा के अनुसार जीने नहीं देना चाहते और फिर इसके कुछ ही हफ्तों बाद — "पर इधर पिछले कुछ हफ्तों से नसीबन देख रही थी कि सत्तार बहुत उदास रहने लगा था।"{3} इस उदासी का कारण सलमा के पति मकसूद का लौट आना है ।

मकसूद के वापिस आ जाने के बाद से ही सत्तार की जिन्दगी में जो उदासी छा जाती है, वह उसकी मृत्यु तक बनी रहती है । सत्तार अब अपने को बेहद अकेला अनुभव करने लगता है । उसे यह मालूम है कि सलमा को मकसूद पसन्द नहीं हैं । मकसूद के यहाँ से तो वह भाग आई है । फिर वह तलाक देकर उससे शादी क्यों नहीं करती ? सलमा की अपनी कुछ मजबूरियाँ हैं । "और एक दिन सलमा भागी-भागी आई थी और

---

1. लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृ० 21
2. पूर्वोक्त - पृ० -
3. पूर्वोक्त - पृ० - 15

सिर्फ इतना ही कहकर चली गई थी कि — कल रात पीपल वाले घर में मिलना... "§1§ शायद वह कुछ ठोस निर्णय लेना चाहती है । शायद वह अपने पति से तलाक लेना चाहती है । इसी सिलसिले में वह सत्तार से बात करना चाहती है और सत्तार उस रात "सोता ही रह गया था .... वह क्या हुआ ? वह समझ ही नहीं पाया । यह कैसे हुआ और क्यों हुआ ।"§2§ और उस रात के बाद सलमा बदल गई थी । साथ ही दूसरे दिन सत्तार को अत्यधिक अकेला और निराश अनुभव करने लगता है । नेताओं के भाषण सुनकर वह अंग्रेजों को मारने की तैयारियाँ शुरू कर देता है । यह सुनकर सलमा उसे मिलने का प्रयत्न करती है । परन्तु सत्तार बस इतना ही जवाब देता है " अब मिलकर क्या करूँगा .... उससे कहना जब मर जाऊँ तो मेरी कब्र पर मिलने चली आये, वहीं मुलाकात होगी । "§3§

---

1. लौटे हुए मुसाफिर " - कमलेश्वर - पृ0 - 20
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 21
3. पूर्वोक्त - पृ0 - 25

कहानी के पात्र और प्रमुख पात्रों का चरित्र विमोचन :

प्रस्तावना :

कहानी के लघु आकार में न बहुत - से पात्रों का समावेश हो सकता है और न ही उनके चरित्र के क्रमिक विकास का चित्रण संभव है । कहानी में तो पात्रों के जीवन के किसी एक अंश की अभिव्यक्ति हो सकती है और उसके द्वारा कहानीकार पात्र की एकाधिक विशेषताओं का अंकन कर पाता है । कमलेश्वर जी ने कहानियों में पात्रों को अधिक महत्व नहीं दिया है, उनका कहना है कि --

कमलेश्वर की अधिकांश कहानियों के पात्र कस्बे के ही पात्र हैं । उनके पहले कथा-दौर की तो समस्त कहानियां और पात्र, कस्बे के हैं । "देवा की मां" की माँ, " धूल उड़ जाती है" की नसीबन, "मुरदों की दुनियां", की सावितरी, और निसार, "आत्मा की आवाज" की भाभी, "राजा निरबंसिया" के जगपति और चन्दा, बच्चन सिंह कम्पाउण्डर, "गरमियों के दिन" के वैद्यराज, "भटके हुए लोग" का परसोत्तम राम, हंसराज, "गाय की चोरी" के मुंशी प्यारे लाल, "नौकरी पेशा", के बाबू राधे लाल, " थानेदार साहब" के थानेदार और कांस्टेबल, "कस्बे का आदमी" के शिवराम और छोटे महाराज तथा "नीली झील" के पारवती और महेसा आदि उनके पहले कथा - दौर के ऐसे पात्र हैं जो सीधे कस्बे की जिन्दगी से ही उठाये गये हैं । दिल्ली आने के बाद कमलेश्वर के दूसरे कथा - दौर की कहानियों में भी अधिकांश पात्र उसी पुराने परिवेश के हैं । "खोयी हुई दिशाएँ" का चन्दर "दिल्ली में एक मौत" का कथा नायक, "एक थी बिमला" की चारों लड़कियाँ, बिमला, कुन्ती, लज्जा और सुनीता, "दुखभरी दुनिया" के बिहारी बाबू, "पराया शहर" के बाप - बेटे, "ऊपर उठता हुआ मकान" के मुरारी बाबू और गौरी, "दूसरे" की सुनीता, " कुछ नहीं, कोई नहीं" की सूरज की माँ और गौरी, "बदनाम बस्ती" के पुलिस वाले आदि दूसरे कथा - दौर के वे समस्त पात्र पूरी तरह से कस्बे के हैं, दिल्ली के नहीं । इसी प्रकार बम्बई आने के पश्चात् उनकी कथा - यात्रा का जो तीसरा दौर है उसमें भी बहुसंख्यक पात्र कस्बे के ही है । "बयान" कहानीसंग्रह की "नागमणि" का विश्वनाथ, या "कुछ और" का रामनाथ आरती की माँ और शंकुतला, "अकाल" के रघुनन्दन लाल और बच्चे, "जोखिम" के माँ - बेटे, "अब और नहीं" के पति - पत्नी, "लहर लौट गयी" की सावित्रि, "फटे पाल की नाव" के सदानंद और ब्रहमानंद और "अजनबी" का कथानायक सभी कस्बे

की जिंदगी के पात्र है । "इत्ने अच्छे दिन" के बाला और कमली [illegible] [illegible] कस्बे की मिट्टी से रचे गये पात्र है । इस प्रकार कमलेश्वर की अधिकांश कहानियों के पात्र कस्बे के जीवन की प्रामाणिक तस्वीर पेश करते हैं । "राते", "बयान", "उस रात वह मुझे बीच कैण्डी पर मिली थी ...." जैसी कहानियों के पूरी तरह शहरी पात्र वहाँ बहुत कम हैं और जो है भी लेखक उनकी अंतरंग तस्वीर पेश नहीं कर सका ।"

पूर्वोक्त कहानियों में से पाँच कहानियों के प्रमुख पात्रों के चरित्र विमोचन करेंगें ।

§1§ राजा निरबंसिया - "जगपति और चंदा"

§2§ खोई हुई दिशाएं - "माँ"

§3§ देवा की माँ -"माँ"

§4§ नीली झील - "महेसा"

§1§ राजा निरबंसिया :

यह कहानी कमलेश्वर जी की सर्वश्रेष्ठ कहानी है । इस कहानी में वैयक्तिक - चेतना के साथ - साथ वर्ग - वैषम्य बहुत ही सुन्दरता के साथ चित्रित किया गया है । इस कहानी में दो कथाएँ एक साथ चलती है । इस कहानी में प्रमुख पात्र जगपति और चन्दा है ।

§1§ जगपति और चन्दा :-

यह दो पात्र "राजा निरबंसिया" कहानी के प्रमुख पात्र है । कमलेश्वर जी ने इस कहानी में पौराणिक लोक कथा, राजा - रानी के साथ मध्यवर्गीय जगपति और चन्दा की कल्पना की है ।

जगपति निम्न मध्यवर्गीय परिवार का है । उसकी पत्नी चन्दा है । दोनों परस्पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट है । जगपति चन्दा को बहुत चाहता है । किन्तु चार वर्षों के वैवाहिक जीवन उपरान्त भी वे निःसंतान हैं । जगपति को पैर में गोली लग जाने पर अस्वस्थ हो जाता है तब धन के अभाव, संतान का दुःख चन्दा को जैसे झकझोर जाता है और चन्दा की इस विवशता से अस्पताल का कम्पाउन्डर बच्चन सिंह लाभ उठाता है ।

वह चन्दा के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है । परिणामतः जगपति को मालूम होने पर चन्दा को पीटा जाता है और उसे मायके भेज दी जाती है और कालान्तर में उसके पुत्र उत्पन्न होता है ।

जगपति के मन में विचार आते हैं कि समाज "चन्दा किसी और के यहाँ बिठा दी जाएगी" यह विचार जगपति को व्याकुल कर देता है और वह आत्महत्या कर लेता है । इस कहानी में पुरूष पात्र जगपति के द्वारा यह बताया गया है कि पुरूष कितना संवेदनशील होता है और कभी - कभी वह अपनी पुरूष -वृत्ति से हट जाता है । जगपति चन्दा के नाम दो पर्चे लिखकर छोड़ जाता है -- "चन्दा मेरी अन्तिम चाह यही है कि तुम बच्चे को लेकर चली आना .... चन्दा आदमी को पाप नहीं पश्चाताप मारता है, मैं बहुत पहले मर चुका था ।"(1) दूसरा पत्र कानून के दावेदारों के लिए -- "किसी ने मुझे मारा नहीं है । मैंने अफ़ीम नहीं रूपये खाए हैं । उन रूपयों में कर्ज़ का जहर था, उसी ने मुझे मारा है । मेरी लाश तब तक न जलाई जाए जब तक चन्दा बच्चे को लेकर न आ जाए -- आग बच्चे से दिलवाई जाए ।"(2)

जगपति कितना तरसता है और किस परिवेश में, महज़ जिन्दा रहने के लिए । कितना चाहता है वह अपनी बीवी को, और आश्चर्य कि वह कितनी सुन्दर है - चन्दा का वर्णन सचमुच चन्दा के ही उपयुक्त है -- लेकिन कितना गन्दा ड्रामा जुड़ा है उसकी जिन्दगी के साथ -- "गरीब की जोरू" होने का । परीक्षा - काल में वह पैसे से हार गयी, उसने अपने को तब तक बचा रखा, जब तक वह यह न जान गयी कि उसे बेच दिया गया है । इस कहानी में गरीब आदमी के लिए अतीत का अर्थ बदल गया है । एक युग की विषमता दूसरे युग की विषमता से एकदम भिन्न है । यह कहानी कमलेश्वर के अतियथार्थवादी रूझान का शुरू से ही परिचय देती है ।

(2) खोई हुई दिशाएँ : - "चन्द्र"

इस कहानी में मुख्य पात्र चन्द्र है । इस कहानी में नायिका कितने सहज भाव से एक से प्रेम और दूसरे से पारिवारिक रिश्तों का निर्वाह कर रही है ।

इस कहानी में "चन्द्र" नामक युवक थका हुआ देखने को मिलता है । "चन्द्र" विचार करता है कि -- "यहाँ कितना परायापन है । यहाँ सब अपना है, अपने देश

1. राजा निरबंसिया - "कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ" - पृ0 50
2. पूर्वोक्त - पृ0 - 50

का है, लेकिन कुछ भी अपना नहीं है, अपने देश का नहीं है । उसकी संवेदना तक पराई है, निश्चित है कि वह झुँझला जाता है, बात - बात पर बिदक जाता है । उसे किसी के बारे में कुछ मालूम नहीं पड़ता । वह निपट अकेला है । इस अकेलेपन के कारण वह एक मानसिक "रेक" भर होकर रह गया है तभी तो वह "खुद से मिलता है" जैसी बेकार बातें सोचता है । वह दोस्तों से भी कतराता है, क्योंकि दोस्त जिन्दगी में गहरे उतरने लगते हैं, और चन्द्र बनावटी जिन्दगी जी रहा है, उसे लगता है कि वह अपना समय व्यर्थ ही बरबाद करता रहा है । वह जब टी हाउस के बाथरूम में जाता है तो वहाँ लगे आईने में अपना मुँह देखकर रह जाता है । चन्द्र को एक ऐसी आवाज जो उसके भीतर टकराती है । "चन्द्र तुम क्या नहीं कर सकते" । यह अवाज इन्द्रा की थी जो चन्द्र की प्रेमिका थी और उसने दूसरे के साथ विवाह कर लिया है । जब चन्द्र से दूबारा मुलाकात होती है तब इन्द्रा की आँखों अस्मिता की चमक थी, लेकिन चन्द्र इस चीज को बहुत देर से समझा । "इन्द्रा भूल गयी कि वह कितने चम्मच चीनी लेता था । क्या सच ही भूल गयी, या यह भी उसकी एक अदा है ? वह कितनी ज्यादा आर्थिक तकलीफ़ में है । इन्द्रा भी शायद यह जानती है, इसके अलावा वह सुव्यवस्थित गृहस्थिन इस कामधामविहीन लड़के में अब क्यों रूचि ले ? जिन्दगी सपने का नहीं, सपनों के टूटने का नाम है, शायद उसे लगता है, उसे कोई नहीं जानता । उसको अपनी पत्नी भी नहीं ।"

इस कहानी में त्रासदी और चरित्र का कितना गहरा और अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । "खोई हुई दिशाओं" में प्रेमिका की खोज एक खोखला आभास बनकर रह जाती है । उसका (चन्द्र) तन्हा मन तनहाइयों को छोड़ कर उस परिचित गन्ध, परिचित साँसों और पहचाने स्पर्शों में डूबना चाहता है । उसे और कुछ भी नहीं चाहिए परिचय की एक माँग है और उस अंधेरे में वह साँस से गंध से और तन के टूकड़े - टूकड़े से पहचानना चाहता है । पुरानी प्रतीति चाहता है ।

कमलेश्वर जी की कहानियों में नारी अपनी पूरी गरिमा, वास्तविकता और आत्म सम्मान की भावना के साथ उपस्थित हुई है । कमलेश्वर ने नारी का बहुपक्षीय चित्रण किया है । कमलेश्वर जी की कहानियाँ गरीब आदमी की बाबत विचार करने वाली कहानियाँ हैं । इधर की रचना पीढ़ी पर उनका प्रभाव नकारने योग्य नहीं है । वे व्यंग्य का साधिकार उपयोग करते हैं ।

§3§ देवा की माँ -"माँ"

इस कहानी में मुख्य पात्र "देवा की माँ" है । यह पूरी कहानी में "माँ" यानी नारी शक्ति के बारे में दिखाया है । माँ की पीड़ा और द्वन्द का अंकन है किन्तु यह पीड़ा और द्वन्द पूरे पारिवारिक परिवेश के तनाव से पैदा होता है । देवा की माँ पति से परित्यक्ता है । पति ने दूसरी शादी कर ली है और पुत्र देवा बेकार है, जो अपनी बेकारी और अनियमितताओं से माँ को परेशान करता है । देवा की माँ सब कुछ चुपचाप सहती जाती है । पति और पुत्र के विषम सम्बन्धों के बीच "देवा की माँ" अपनी अभावग्रस्त जिन्दगी खींचती है और बोझ के बीच भी पति के प्रति एक कोमल भाव रखती है । देवा राजनीतिक हलचल में जेल चला जाता है । वह पति को संदेश भिजवाती है कि देवा की जमानत हो जाय, पति इनकार करता है । तब देवा की माँ अपना सारा सुहाग का सिंदूर तुलसी को जाकर सौंप देती है । किन्तु जब देवा जेल से छूटकर जाता है तो उसका पिता बीमार पड़ जाता है और वह अस्पताल में होता है । देवाकीमाँ से अनुरोध करता है — "चल माँ, पिताजी को देख आयें ।" माँ अपनी सारी पीड़ा दबाकर क्रोध से कहती है -- "नहीं, वहाँ नहीं जाना है ।" किन्तु अपने पति का सुहाग का सिंदूर फिरसे अपने माथे में लगा लेती है । इस प्रकार एक पारिवारिक वातावरण के बीच देवा की माँ को प्रस्तुत कर भारतीय पत्नी की तकलीफ और द्वन्द्व को उद्घाटित करती है ।

§4§ माँस का दरिया :- "जुगनू"

"जुगनू" इस कहानी में आरंभ से लेकर अंत तक छायी रहती है । इस कहानी में मुख्य पात्र "जुगनू" ही है । जिसकी सारी कथा बुनी गई है । कमलेश्वरजी की इस कहानी का स्वर नितान्त भिन्न है । संवेदनशील साहित्यकारों ने वेश्याओं का चित्रण करने की हर बार कोशिश की है । कमलेश्वरजी ने इस चित्रण के लिए शुद्ध यथार्थवादी मानवीय दृष्टि से काम लिया है । वे तो उनको सही रूप में देखने की ईमानदार कोशिश करते हैं । कमलेश्वर की "माँस की दरिया" इसी कारण एक विशिष्ट कहानी बन पड़ी है ।

यह एक ऐसी वेश्या जुगनू की कहानी है, जो अपना सारा जीवन कोठे में ही बिता देती है । जुगनू का स्वास्थ्य क्षीण होने के कारण उसे तपेदिक होने लगता है, तब उसकी मनोवेदना बढ़ जाती है और वह उम्र भर का हिसाब - किताब करने लगती है ।

दवाई करवाने के लिए लिया हुआ कर्ज चुकाने के लिए फिर से अपने कर्जदार कंवरजीत को जांघ पर फोड़ा होने पर भी अपने ऊपर झेलती है । उसके जांघ पर फोड़ा होने पर पहला जो ग्राहक आता है उसे मना कर देती है । और वह चला जाता है किन्तु कंवरजीत से कुछ नहीं कहा जाता वैसे "बहुत बार उसने कराह दबाई और कंवरजीत को रोका । आंखों के सामने अंधेरा छा - छा जाता था और जोर पड़ते ही जांघ फटने लगती थी -- अरे रूक तो - वह चीखा था और जुगनू की टांगे दबाकर हावी हो गया था । -- अरी अम्मारे - मार डाला - वह पूरी आवाज़ में चीखी थी, जैसे किसी ने कत्ल कर दिया हो और वह छटपटाकर बेहोश - सी हो गयी थी ।"§1§ कंवरजीत के जाने के बाद वह फत्ते से पानी मंगवाती है और फिर नीली कमीज और झोले वाले को, बुलाने के लिए कह कर एक बार फिर शांस रोक लेती है ।

जुगनू का शरीर जब स्वस्थ और सुंदर था तब गली मुहल्ले के सब लोग उसके पीछे घुमते थे किन्तु स्वास्थ्य क्षीण होने के कारण सब लोग उसे देखकर मुंह फेर लेते हैं, यहां तक की कोठे वाली बड़ी बोस भी उसे थोड़े पैसे देकर भेज देती है । जुगनू से यह सब देखा नहीं जाता वह यही सोचती रहती है कि दुनिया कितनी स्वार्थी है ।

यह कहानी जुगनू पात्र के माध्यम से सिर्फ जुगनू की कहानी ही नहीं किन्तु समस्त वेश्या - वर्ग की कहानी है । जो शरीर की किसी भी स्थिति में हो अपने उसी उपक्रम को करने के लिए बाध्य है । वे शारीरिक और मानसिक व्यथा सहकर भी परिस्थितियों के आगे झुकती नहीं है -- "मांस का दरिया" की जुगनू की चीख सारे वैदिक वाक्यों को झुठलाकर रख देती है, जो उनके सम्मान कहे गये हैं । मांस का दरिया" ही नहीं, बहता, उसके एक - एक कतरे को मोल होता है, जो हमारे सांस्कृतिक उपोरशंखी व्यवस्था के परखचे उठा देता है ।"§2§

§5§ <u>नीली झील</u> :- <u>"महेसा"</u>

यह कहानी कस्बाई मनोवृत्ति के कहानीकार कमलेश्वर जी ने "नीली - झील" में अपनी इस प्रवृत्ति का खुलकर परिचय दिया है । ग्रामीण व्यक्तियों में वैयक्ति - चेतना कितनी उभारी जा सकती है । यह इस कहानी में स्पष्ट हो जाता है ।

---

2. "कमलेश्वर" सामाजिक आस्थाओं का कलाकार -संग्रह मधुकर सिंह - पृ0 153-154
1. "मांस का दरिया" - कमलेश्वर - पृ0 - 24

कहानी का नायक महेसा जो इस कहानी का प्रमुख पात्र है । वह प्रारम्भ में "नीली - झील " पर आने वाली पर्यटक मंडलियों में उच्च वर्ग की सुन्दर सुसज्जित नारियों के आगे - पीछे घूमकर अपने रूमानी स्वभाव और सौन्दर्य - चेतना का परिचय देता है । लेकिन विडम्बना यह है कि उच्च वर्ग की सुन्दरियाँ अपने आप को ऊँचा समझती हैं और उसके मोह - पाश में नहीं फँस पातीं । महेसा की चेतना इतनी प्रबल है कि वह अपने निम्न वर्गीय संस्कारों से उपर उठकर उच्च वर्गीय स्त्रियों से प्रेम करना चाहता है — "महेसा आंख मिलाने के लिए उतावला था पर साहबों से नहीं । जैसे उसने यही तय किया था कि नीली साड़ी वाली औरत अगर कहेगी तो वह फावड़ा छोड़कर सामान उठा लेगा ।" (1) किन्तु वह धीरे - धीरे समझ जाता है कि वह उसके लिए नहीं है । बस्ती की चालीस वर्षीया धनी पंडिताइन पारबती से विवाह करके उसका प्रेम स्थिर हो जाता है । महेसा की पत्नी का प्रसव - काल में देहावसान हो जाता है । महेसा उसकी इच्छानुसार संचित धन से मंदिर एवं धर्मशाला बनवाना चाहता है, किन्तु एक दिन झील पर शिकारियों द्वारा घायल पक्षी को देखकर वह इतना द्रवित हो उठता है कि उसी धन से दल - दल वाली "नीली - झील" खरीदकर वह शिकार करने के लिए निषेधात्मक तख्ती लगवा देता है ।

इस कहानी के पीछे अनुभूति की प्रमाणिकता ही पहली चीज है, और महेश पाण्डे का चरित्र लेखक का पूरी तरह "जीया" हुआ चरित्र है, वरना कहानी दोनों स्तरों पर इतनी गम्भीरता और करुणा से आगे न बढ़ती ।

" नीली - झील " यहाँ प्रतीक है । इस प्रतीक के माध्यम से स्पष्ट हुआ है - आंचलिक वातावरण, महेसा के उदगार, ऊँची - ऊँची भावनाएँ, वैयक्तिक गर्व के साथ मन में उठते स्नेह, करुणा एवं निर्मल त्याग जलचरों के खून से ग्रामीण समाज रूपी "नीली - झील" का जल अब तक रक्त से रंगा जा रहा है, किन्तु महेसा के रूप में एक एक ऐसा कड़ा पहरेदार खड़ा हुआ, जिसने उच्च वर्ग द्वारा ग्रामीण संस्कृति को विकृत ग्रामीण संस्कृति सुरक्षित रहे ।

---

1. "नीली - झील" - कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - संग्रह- पृ० 114